भूमिका

'मिस्टर अभिमन्यु' नाटक का नायक का प्रतिनायक मिस्टर राजन अपने होने की शर्त पूरी नहीं कर पाता, 'बाहर' निकलना चाहता है। ढाई हजार वर्ष पहले लिखे गये महाभारत का अभिमन्यु भी बाहर निकलना चाहता है–उसे प्रवेश करना सिखाया गया था, बाहर निकलना नहीं। लेकिन महाभारत के अभिमन्यु और डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल के अभिमन्यु में, जिसे 'मिस्टर अभिमन्यु' कहकर उन्होने विडम्बना को उजागर कर दिया है, एक बुनियाद फर्क है। अभिमन्यु सचमुच ही बाहर निकलना चाहता था, जिसके लिए उसने सच्ची लड़ाई लड़ी थी और वह मारा गया था, लेकिन मिस्टर अभिमन्यु बाहर निकलना नहीं चाहता––उसे केवल भ्रांति है कि वह बाहर निकलना चाहता है। इस भ्रांति को बनाये रखने के लिए वह एक लड़ाई भी लड़ता है, जो झूठी नहीं, सच्ची लड़ाई है––केवल इतना है कि वह एक अनिर्णय ले चुका हो। अभिमन्यु की पराजय में ही उसकी जीत निहित थी, मिस्टर अभिमन्यु की हार केवल हार है, वह आधुनिक व्यक्ति की त्रासदी और विडम्बना की तत्सम अभिव्यक्ति है, जिसकी मृत्यु महान् नहीं और जिसका जीवन पराक्रम नहीं। एक तरह सके शौर्य और महानता का युग समाप्त हो चुका है, केवल निजी लड़ाईयां बची हैं, जिन्हें महा काव्य के स्तर पर नहीं बल्कि गुमनाम सभ्यता में अपने व्यक्तित्व और निर्णय की सर्वथा निजी तलाश के स्तर पर लड़ा जा सकता है। जिस सभ्यता का निर्माण आजाद हिन्दुस्तान ने पिछले वर्षों में किया है, जिसके प्रतीक हैं पूंजीपति केजरीवाल, सरमायेदारी का राजनैतिक प्रवक्ता गयादत्त, कलेक्टर राजन के दुनियादार पिताजी और मूल्यों की दुनिया से अनभिज्ञ उनकी पत्नी, भ्रष्ट अफसर, मन्त्री और पुलिस और सबसे अधिक स्वयं राजन। हर व्यवस्था अंततः एक षड्यंत्र में परिणत होती है। भारत की मौजूदा समाज–व्यवस्था एक ऐसा षड्यंत्र है, जिसके बाहर निकलने का रास्ता आसानी से नजर नहीं आता और जिसके भीतर रहते हुए दम घुटता है। राजन की त्रासदी वहां से शुरू होती है, जहां वह यह अनुभव करता है कि वह इस षड्यंत्र में शामिल है। देश में हजारों अफसर, लाखों कर्मचारी, सैकड़ो हुक्काम हैं, जो आजीवन दूसरों का गला काटते और पाप की जय–पताका फहराते और मुनष्य के अपमान की नयी से नयी तरकीबें ईजाद करते हैं मगर उन्हें कभी यह बोध नहीं होता की वे कुछ गलत कर रहे हैं। उन्हें उत्तराधिकारी के रूप में दरअसल यही मिला है। उन्हें आत्मारक्षा के लिए यही अस्त्र भी दिया गया है। उन्हें यही अन्तर्रात्मा मिली है।

राजन उन्हीं में से एक होता हुआ भी उनसे भिन्न है। उसका कैरियर उसके पिता ने उसके लिए चुना है। उसका मुहावरा शिक्षा–संस्थाओं ने उसके लिए बनाया है। उसके कपड़े, उसकी पत्नी ने उसके लिए चुने हैं। उसका सब कुछ दूसरों ने उसके लिए चुना है। कुछ भी ऐसा नहीं, जिसे वह निजी कह सके। केवल एक ही चीज उसे दूसरों से भिन्न बनाती या कि बनने की प्रेरणा देती है––वह है उसका एहसास।

औरों की जिन्दगीं में यह सवाल अक्सर नहीं उठती कि क्या उनकी अपनी कोई नियति है ? क्या वे केवल व्यवस्था के होकर रह जायेंगे ? राजन की जिन्दगी में यही सवाल एक अनोखे ढंग से पैदा होता है। एक दिन उसे यह पता चलता है कि उसकी तरक्की हो गयी है और जिन कारणों से वह तरक्की हुई है, वे उसके पैदा किये हुए कारण नहीं है। उसे पता चलता है असंस्कृत, मर्यादाहीन, गयादत्त के जिससे उसे दिया जा रहा है, उसे कलेक्टर से कमिश्नर बनाया जा रहा है, और वह एक बहुत बड़ी साजिसश में फंसाया जा रहा है––हालांकि उसकी जीत के लिए वह कतई जिम्मेदार नहीं है। दूसरे शब्दों में उसे षड्यंत्र में, जो घट चुका है, शमिल किया जा रहा है। राजन के व्यक्तित्व का संकट इसी बिन्दु से शुरू होता है और उसकी लड़ाई थोड़ी दूर चलकर सहसा समाप्त हो जाती है। समग्र व्यवस्था से लड़ने का उपक्रम करता हुआ वह अचानक अपने ही भीतर के एक चौदह वर्षीय किशोर (राजन) से पूरी तरह पराजित हो जाता है। दरअसल राजन एक अभिश्प्त व्यक्ति है। वह त्याग पत्र देना चाहता है पर देता नहीं, वह केजरीवाल का गोदाम सील करता है, पर आदेश की अवहेलना नहीं कर पाता। वह व्यवस्था को नापसंद करता है, पर उसे तोड़ नही पाता। वह व्यवस्था के बाहर नहीं आता। बाहर आने के अपने खतरे हैं। भीतर घुटन है, मगर सुरक्षा भी है। वाहर मुक्ति है, लेकिन मृत्यु भी है।

यह संदिग्ध है कि क्या सचमुच ही राजन बाहर आना चाहता था, या कि उसका सारा विद्रोह एक अभिजात की सौंदर्य विलासितामात्र थी ? उसे गयादत्त से नफरत क्यों होती है ? क्या इसलिए कि गयादत्त शोषण और सरमायेदारी का पोषक है या इसलिए कि गयादत्त एक फूहड़ व्यक्ति है ? इस संदेह का कारण है, राजनीति के प्रति राजन की वितृष्णा।

अगर राजन गयादत्त की राजनीति का विरोधी होता तो उसकी नियति भी सम्भतः कुछ और होती। तब बाहर आ भी सकता था। मगर गयादत्त की राजनीति का विरोधी राजन नहीं, आत्मन है। गयादत्त से और उसके माध्यम से केजरीवाल से वास्तविक लड़ाई राजन नहीं, आत्मन लड़ रहा है। जिंदगी राजन की नहीं, आत्मन की खतरे में है। मारा राजन नहीं, आत्मन जाता है।

वैसे आत्मन की मृत्यु राजन की मृत्यु है। फैंटेसी का इस्तेमाल करते हुए डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल ने आत्मन और राजन के रिश्ते को बहुत कारीगरी के साथ तय किया है।

''राजन : तुम हंस पड़े न। तुम मुझे नहीं जानते।

आत्मन : कैसे जानता...तुम इधर नौकरी में आये, मैं उधर राजनीति में छुट गया। तुम इधर जी–जान से घर–गृहस्थी सजाने लगे, दिन–रात नौकरी करते रहे, मैं उधर विरोध में जा फंसा..रास्ते में कई बार देखा था, तुम मुझसे आंख बचाये भागे चले जा रहे थे....।''

कहने की जरूरत नहीं कि आत्मन राजन के व्यक्तित्व का वह अंश है जो उसी उससे छुट गया, जबकि राजन ने अफसरी का निर्णय लिया। गयादत्त भी राजन के ही व्यक्तित्व का दूसरा अंश है। राजन आत्मन हो सकता था, मगर वह कभी भी आत्मन न हो सका। उसके इस हिस्से का गयादत्त पूरी तरह संहार कर देता है। आत्मन मारा जाता है, गयादत्त की पिस्तौल से, मगर उसकी मृत्यु प्रसिद्ध होती है राजन के विवेक में, राजन द्वारा की गई हत्या के रूप में।

रूपक का प्रयोग केवल रूपक के लिए न करते हुए लक्ष्मीनारायण लाल ने राजन के अन्तःसंघर्ष को, जो कि आज के अभिमन्यु का साक्षात चक्रव्यू है, उसकी समग्रता में उपस्थित कर हिन्दुस्तानी जिन्दगी की त्रासदी की और भी गहरा कर दिया है।

मिस्टर अभिमन्यु के माध्यम से उठाया गया प्रश्न, समसामयिक बहुत–से नाटकों की बुनियाद से ज्यादा संगत और सार्थक है। वह बहुत–से लोगों का, शायद हममें से प्रत्येक का प्रश्न हो सकता है। क्या हम भी किसी ऐसे चक्रव्यूह में नहीं घिरे हुए हैं जिससे बाहर निकलने की पर्याप्त इच्छा और संकल्प हमारे पास नहीं है ! हमारी त्रासदी यह नहीं कि हम अभिमन्यु नहीं हैं। हम मिस्टर अभिमन्यु हैं।

चक्रव्यूह हर युग का अपना होता है, अभिमन्यु सभी युगों का एक ही होगा। अगर वह मूल अभिमन्यु नहीं तो फिर वह केवल मिस्टर अभिमन्यु ही हो सकता है। अश्वथामा की तरह अभिमन्यु भी अमर और अद्वितीय है।

पौराणिक चरित्र को नये मंच पर पेश करना अपने–आप में एक चमत्कारिक कृत्य हो सकता है, मगर किसी पौराणिक चरित्र के मूल अर्थ को एक नये संदर्भ में रखकर अपने समय की विडम्बना को उद्घाटित करना ज्यादा कठिन काम है। पश्चिमी रंगमंच ने इस शताब्दी में बहुत हद तक यह महत्त्वपूर्ण काम किया है। ऐसा करते हुए उसने दो युगों की स्थितियों के अन्तर और फासले को साफ किया है। मिस्टर अभिमन्यु भी यह फासला सामने रखता है। वह अपने समय पर टिप्पणी करता हुआ यह घोषणा करता है कि उसकी त्रासदी बिल्कुल आज की त्रासदी है। उसके सवाल बिलकुल आज के सवाल है। कोई और युग, कोई और आख्यान, कोई और चिकित्सा उसकी सहायता नहीं कर सकती। उसकी मृत्यु बिलकुल आज की मृत्यु है। उसका चक्रव्यूह बिलकुल आज का चक्रव्यूह है।

आज की कोई कृति, जो कि आज के बौद्धिक प्रश्न और मानवीय संकट से नहीं जूझती, मूल्यांकन के योग्य नहीं मानी जा सकती। नाटक पर यह बात खास तौर से लागू होती है क्योंकी कविता अरण्यरोदन भी हो सकती है, नाटक केवल संवाद ही हो सकता है। संवाद किस बात को लेकर ? अगर संवाद के पीछे कोई बेचैनी, संकट और उत्सुकता नहीं हो तो वह केवल एक मनोविलास होगा, मनोरंजन होगा।

हिन्दुस्तानी रंगमंच की पिछले कुछ वर्षों की सबसे बड़ी घटना है यह एहसास कि नाटक अपने समाज से प्रश्न करने का सबसे सार्थक और साक्षात् माध्यम है। कम से कम बंगला, मराठी, कन्नड़ और हिन्दी के बारे में यह बात दावे के साथ कही जा सकती है। यह जरूर है कि हिन्दी में यह एहसास औरों की तुलना में कुछ कम है। ' मिस्टर अभिमन्यु' नाटक का महत्व इसलिए और भी बढ़ जाता है कि वह इने–गिने नाटकों में से है, जो प्रश्न करने के साहस को और बढ़ाते तथा उसकी जरूरत को अनवार्यता में परिणत करते हैं।

————श्रीकांत वर्मा

पहला अंक

पहला दृश्य

(कलक्टर मिस्टर राजन के बंगले का बाहरी कमरा। पीछे, भीतर जाने का दरवाजा। दरवाजे से दायीं ओर एक ऑफिस टेबुल और तीन–चार कुर्सियां। टेबुल पर टाइपराटर, कागज–पत्र आदि रखे हैं। इससे आगे, किनारे दांयी ओर नीची टेबुल पर फोन रखा है।

बायीं ओर, सोफे के सिर्फ दो अदद रखे हैं––बीच में टेबुल। उस पर अखबार, ऐश–ट्रे वगैरह रखे हैं। इस सोफे के पीछे, दीवार से सटा हुआ एक बुकशेल्फ रखा है। इसमें किताबें, बच्चों के कुछ खेल–खिलौने भी रखे हैं। ऊपर एक टूटी हुई छोटी–सी पत्थर की मूर्ति और फूलदान रखा है।

दर्शकों से प्रकाश बुझते ही मिस्टर अभिमन्यु का एक विशेष संगीत उस अंधेरे में कुझ क्षणों तक तिरता है। सहसा राजन पर प्रकाश आते ही संगीत टूट जाता है। वह सोफे पर बैठे किसी फाइल में डूबे हैं। फाइल रखकर तेजी से उठते हैं। ऑफिस टेबुल पर जाते हैं। वहां दो–एक कागज देखते हैं। टाइपराइटर पर चढ़ा हुआ कागज देखते हैं। बुकशेल्फ के पास आते हैं। उसमें से एक किताब निकालते हैं। उसके पृष्ठ उलटते–उलटते सहसा ध्यान उस टूटी हुई मूर्ति पर जाता है। उसे लेकर एकटक निहारते हैं। हल्की–सी हंसी आ जाती है। किताब रख देते हैं। दूसरी किताब ढूंढ रहे है। भीतर से विमल आती हैं।)

विमल : सुनिये।

(राजन तेजी से एक किताब बन्द करते हैं।)

विमल : देखिए, दस बज गये।

(राजन कोई कागज फाड़ते हैं।)

विमल : मुझे बताइये, मैं कुछ.....

(बच्चे का लोहतरंग खिलौना गिरता है। विमल बढ़कर उठा लेती हैं। पर राजन उसे छोड़ते नहीं। लेकर उसे तेजी से छेड़ते है और मूर्ति के पास रख देते हैं।)

विमल : क्या बात है ?

(बढ़कर सोफे पर से फिर वही फाइल उठा लेते हैं। विमल लौहतरंग खिलौने को बड़े आहिस्ता–आहिस्ता बजाने लगती हैं। एक बिन्दु पर आकर राजन उस फाइल को ज्यों–की–त्यों फाड़ डालना चाहते हैं। फाड़ने के संघर्ष में वह भीतर चले जाते हैं। दायीं ओर से श्री आता है।)

श्री : हुजूर, साहब के पिताजी आये हैं।

विमल : सच !

(पिताजी का प्रवेश। विमल चरणस्पर्श करती हैं।)

पिता : सौभाग्यवती रहो...सब ठीक–ठाक ? ....रज्जन कहां है ?

विमल : अन्दर आइये।

पिता : (सोफे पर बैठते हुए) यह क्या सुन रहा हूं, बहू ?

विमल : साहब को बोलो, पिताजी आए हैं।

(श्री अन्दर जाता है।)

पिता : बैठो....क्या बयान करूं, वकालतखाने से घर पहूंचा ही था, केजरीवाल मिल का मैनेजर गाड़ी लिए हुए दरवाजे पर हाजिर...उसने जो रिपोर्ट दी, मैं घबरा गया। कहां मैं खुशियां मना रहा था, मेरा रज्जन से कमिश्नर हो गया। मैने वहां लोगों को दावतें दीं...और एकाएक कल यह खबर कि यह नौकरी से इस्तीफा दे रहे हैं, मेरे पैर के नीचे से जैसे जमीन खिसक गयी...बहू, बात क्या है ? मुझे साफ–साफ बताओ।

विमल : मैं खुद हैरान हूं। मुझे भी कुछ नहीं मालूम।

(श्री आता है।)

श्री : साहब आ रहे हैं। (बाहर जाता है।)

विमल : बहुत अच्छा हुआ आप आ गये...कल ही आपको ट्रंककाल करवाने वाली थी।

(राजन का प्रवेश)

राजन : (हाथ जोड़कर निःशब्द नमस्कार)

पिता : खुश रहो....आओ। बेटे, मैं यह क्या अफवाह सुन रहा हूं ?

(सन्नाटा)

राजन : आप जानते हैं पिताजी, मैं शुरू से ही नौकरी के खिलाफ था....

पिता : हां.....

राजन : आपकी इच्छा और आज्ञा थी –आपका लड़का आई0ए0एस0 में आयें। वह कलक्टर–डिस्ट्रिक मजिस्ट्रेट हो। अब वह बात भी पूरी हो गयी।

पिता : (हंसते हैं।) भई, अभी तो बात बनी है...

राजन : क्या ?

पिता : बेटे, मैं एक बुनियाद वात कर रहा हूं।

राजन : मैं भी वही बुनियाद बात कर रहा हूं। मैं अब इस नौकरी से बाहर निकल रहा हूं।

(विराम)

राजन : पिछले दिनों यहां मंत्रीली आये थे।

पिता : हां, अखबार में पढ़ा था।

विमल : 'बाई एलेक्शन' में सरकारी पार्टी के उम्मीदवार गयादत्त को जो जीत हुई है, मंत्रीजी ने मुझसे कहा, ''पार्टी को जरा भी उम्मीद न थी कि हमारी जीत होगी, पर मिस्टर राजन, आपकी मदद ने जो कमाल दिखाया, हमें उससे बेहद खुशी हुई...आपका कमिश्नर होना मुबारक हो।'' उनका मतलब था, 'बाई एलेक्शन' में मैने बेईमानी की है और यह कमिश्नरी मुझे उसी में इनाम में दी गयी है...

'दिस इज़ समथिंग हॉरिबुल'.....।

पिता : उनके कहने से क्या होता है.....

राजन : अब उन्हीं के कहने से सब होता है।

पिता : पर तुम अपनी जगह पर हो।

राजन : नहीं, यहां हर आदमी जैसे एक–दूसरे के रास्ते पर खड़ा है। मैं खुद खड़ा हूं दूसरे रास्ते पर। यह नौकरी किसी और की थी....

(विराम)

राजन : इसके बाद मंत्री महोदय ने बेहद इतमीनान से कहा––''मिस्टर राजन, आपके काम में हमें बहुत खुशी है, तभी आपको इतनी इम्पार्टेण्ट कमिश्नरी चार्ज दिया जा रहा है। आने वाले जनरल एलेक्शन के लिए वहां से आपको वारह लाख रूपयों का इन्तजाम करना है।''

(विमल तेजी से अंदर जाती हैं। राजन सोफे पर बैठते हैं। विमल गिलास भरा पानी ले आती हैं। राजन पानी पीते हैं।)

विमल : पिताजी, अन्दर ड्राइन्ग रूम में आइए।

पिता : सारा केस समझ गया।

(राजन सूनी निगाह से पिता को देखते रह जाते हैं। विमल अन्दर जाती हैं।)

पिता : और यह केजरीवाल का क्या 'केस' है ?...सुना है, केजरीवाल को इस कमरे से बाहर निकाल दिया ! अभी पिछले दिनों गयादत्तजी हमारे यहां एक स्कूल का उद्घाटन करने आये थे, तब उन्होने बताया था। केजरीवाल के सारे फायर आर्म्स भी जब्त कर लिये ?

राजन : मुझे खास तौर से इस बिगड़े हुए जिल में भेजा गया था। रात–दिन एक कर, इस जिले को सम्हाला, मगर केजरीवाल साहब....

पिता : भई, वह काफी पहुंच के आदमी हैं.... उनकी शाखें भी बहुत हैं।

राजन : तभी पिछले तेरह बर्षों से एक पैसा भी टैक्स नहीं दिया। हर कलक्टर आया, और इस फाइल में कुछ और पेज जोड़कर चला गया।

(पिताजी के हाथ में वह मोटी फाइल थमा देते हैं।)

राजन : मैंने एक्शन लिया। यह देखिए...यह देखिए...यह मेरी जिम्मेदारी थी कि सारे टैक्स वसूल किये जाएं।

पिता : तुम्हें भी वैसे ही करना चाहिए था। (उठ जाते हैं। कोट–टाई वगैरह उतारते हुए) मेरा मतलब, जैसा जमाना हो, उसी के मुताबिक चलना चाहिए। आखिर और लोग भी तो आए थे। वह बात और है कि तुम अपनी ईमानदारी और बेदाग हुकूमत के लिये पूरे सूबे में मशहूर हो। यह मेरे लिए फख्र की बात है। मगर अब यह तुम्हारी शान के खिलाफ है कि एक मामूली बात पर ऐसी नौकरी से 'रिजाइन' कर दो। लोग क्या कहेंगे !

राजन : मुझे कोई परवाह नहीं।

पिता : मगर हमें तो है। तुम्हारा नाम....तुम्हारी घर–ग्रहस्थी, सबका फ्यूचर सबका दुख–सुख....हम सब लोग....

राजन : सब लोग ?

पिता : मेरा मतलब, ऐसा होता ही है, इसमें परेशान होने की कोई बात नहीं।

राजन : (उठते हुए) आदमी से कलक्टर को जाना यह आपकी लड़ाई थी, जिन्दगी में आप वकील थे। कलक्टर आपके लिए ईश्वर था।

(भीतर से विमल का प्रवेश)

विमल : आइये, नास्ता तैयार है।

(राजन चुप हैं।)

पिता : आओ, बेटे....

राजन : कर चुका हूं....किसी को बुला रखा है।

(विमल के संग पिताजी भीतर जाते हैं। राजन फिर वही फाइल, कागजात देखने लगते हैं। श्री आता है।)

श्री : हुजूर, आत्मन साहब तशरीफ ले आये हैं।

राजन : बाहर बैठाओ।

(कागजात देखने में डूबे हैं। भीतर से विमल आती हैं।)

विमल : अन्दर आकर एक मिनट पिताजी का साथ तो दे दो !

राजन : दो न !

विमल : एक मिनट के लिए अपना काम रोक नहीं सकते ?

(राजन चुप हैं।)

(विमल अन्दर जाती हैं।)

राजन : (कुछ क्षणों बाद) श्री, आत्मन साहब को भेजो।

(आत्मन का प्रवेश)

राजन : गयादत्त जी कहां हैं ?

आत्मन : मुझे क्या मालूम ?

राजन : आप दोनों को एक संग बुलाया था।

आत्मन : खैरियत तो.....

राजन : आप दोनों के सामने मुझे यह जानना है कि आपके 'बाई एलेक्शन' में मैंने क्या बेईमानी की।

आत्मन : यह वही बता सकते हैं।

राजन : मिस्टर आत्मन, आप जैसे पढ़े–लिखे लोगों को इस जलील पॉलिटिक्स में नहीं आना चाहिए।

आत्मन : यानी नौकरी करनी चाहिए ?

राजन : नौकरी को राजनीति ने गंदा किया।

आत्मन : राजनीति को भी नौकरशाही ने बेहुदा बनाया। यहां इस तरह नौकरी की परिकल्पना अंग्रेजी की थी। गुलामों पर गुलामों से शासन कराना और जिन्दगी की सहज धार को हर मोड़ पर लाल फीते से बांध देना।

राजन : वहीं से आपकी राजनीति भी तो आयी है।

आत्मन : सब कुछ वहीं से आया है।

राजन : पर अब तो यहां अग्रेंज नहीं हैं।

आत्मन : मगर सत्ता का आधार वही है।

राजन : आप इसे बदलते क्यों नहीं ? इत्ते बड़े 'लेबर लीडर' हैं और पिट गये गयादत्त से।

आत्मन : (हंसने लगता है) अजी, न जाने कित्ती बार पिटा हूं। तब से आज कितने वर्ष हो गये...दो–दो बार जनरल एलेक्शन में हारा, इस तसरी बार 'बाई एलेक्शन' में। छः–सात बार जेल काट आया टियर गैस, लाठी–चार्ज..यह तो जैसे भोजन हो गया....और दरअसल वह असली बुनियादी का वहीं क वहीं रह गया।

राजन : वही का वहीं रह गया।

आत्मन : बल्कि उस पर धीरे–धीरे जंग चढ़ गया।

(विराम)

राजन : पर आप तो सदा विरोधी दल में थे !

आत्मन : मगर उस विरोध की सीमा से कभी बाहर तो नहीं निकल सका। (हंसता है) और जिसके हम विरोधी हैं, उसने अपने आप में ऐसी ताकत पैदा कर ली है कि विरोध के हर रूप को वह हजम कर लेता है....लगता है, वही हमारे विरोध का अब संचालन भी करता है।

राजन : यह कहते आपको शर्म नहीं आती !

(आत्मन हंस रहा है।)

राजन : राजनीति एक दर्शन थी, मनुष्य को श्रेष्ठ और सुन्दर बनाने के लिए तुम्हारी आज की राजनीति उसी मनुष्य को बरबाद कर सिर्फ वही सत्ता और 'लग्जरी' हथियाने का 'शॉटकट' है।

आत्मन : यह आप कह रहे हैं।

राजन : हर चीज आगे चलकर अपनी बुनियाद से हट जाती है।

आत्मन : दिस इस हिस्ट्री।

राजन : दिस इस पॉलिटिक्स।

(विराम)

श्री : (आकर) हुजूर, गयादत्त साहब आये हैं।

राजन : बैठाओ बाहर।

(श्री जाता है।)

राजन : आप और गयादत्त की लड़ाई का फायदा केजरीवाल उठाता है। मैं चाहता हूं, यह फायदा खत्म हो।

आत्मन : चाहने और होने में इतना अन्तर है कि हमें इतनी बातें करनी पड़ती हैं।

(विराम)

राजन : तो गयादत्त से कुछ कहना बेकार ही है, श्री... (श्री जाता है) गयादत्त से बोलो, अब वक्त नहीं। तशरीफ ले जायं....

गयादत्त : (प्रवेश कर) लेकिन मैं तो अब आ गया हूं। मुझे देर हो गयी। जैसे ही चलने को हुआ, कुछ बहुत जरूरी लोग आ गये। आप तो जानते हैं, आज की जनता की कितनी–कितनी समसयाएं हैं। कहिए साहब, आपकी पीठ का दर्द कैसा है ?

राजन : मैं इनसे कुछ जरूरी बातें कर रहा हूं।

गयादत्त : आपको कुछ जरूरी बातें मुझसे भी तो करनी हैं।

राजन : अपनी घड़ी देखिये।

गयादत्त : ओह, इसकी मत पूछिए। (घड़ी में चाभी देने लगते है) लेकिन मैं अब जाऊंगा कहां, आ जो गया हूं।

आत्मन : और अंग्रजों की तरह इनका विश्वास पक्का हो गया है कि अब यह यहां से कभी नहीं जायेंगे।

गयादत्त : सुना है, पिताजी आये हैं। कहां हैं ? उनसे मेरी बड़ी पुरानी.... (हंसता है।)

आत्मन : (उठते हुए) अब मुझे इजाजत दीजिये।

राजन : जा रहें है ?

गयादत्त : पिछले दिनों लाठी की चोट लगी है। बेचारे को, डाक्टर ने 'कम्पलीट रेस्ट के लिए कहा है।

आत्मन : देखिए न, इन्हें सब मालूम है। सिर्फ अपनी मौत का पता नहीं ।

(आत्मन हंसते हुए तेजी से चले जाते हैं। इस बीच श्री ने टेबुल पर सारी फाइलों को ठीक प्रकार से बांधकर पीछे ऑफिस टेबुल पर रख दिया है और वहां तैनात खड़ा है।)

गयादत्त : सुना है, आप बहुत परेशान हैं। उस मंत्रीजी ने आपसे कुछ ऐसा–वैसा तो नहीं कह दिया ! मेरा मतलब, ये लोग यूं ही बहुत कुछ बक जाते हैं, क्या करें, इनकी आदत जो हो गयी है।

(राजन अखबार पढ़ने लगते है।)

गयादत्त : आप तो इतने समझदार आदमी हैं, दरअसल पॉलिटीशियन की बातों को इस तरह सीरियसली नहीं लेना चाहिए... मेरा मतलब, उसने उलझना नहीं चाहिए।

(राजन पढ़ रहें है।)

गयादत्त : मेरा ख्याल है, केजरीवाल के बारे में मंत्रीजी ने जरूर आपसे कुछ बातें की होंगी।

(राजन देखते हैं।)

गयादत्त : जरूर की होंगी। यह कैसे हो सकता है !

राजन : 'हाउ इज इट कन्सर्न यू' ?

गयादत्त : मंत्रीजी ने मेरे सामने चीफ सेकेटरी को टेलीफोन किया है।

राजन : किया होगा।

गयादत्त : देखिये, मैं आपकी बड़ी इज्जत करता हूं। मैं आपका एहसानमन्द हूं। आपको नेक सलाह देता हूं, आप यहां का सारा चक्कर यहीं छोड़कर ठाठ से अपने नये पद पर जाइये।

राजन : धन्यवाद ।

गयादत्त : श्री केजरीवाल बेहद नेक आदमी हैं। राष्ट्रीय संग्राम में उनकी.....

राजन : (अखबार बन्द करते हुए) तभी पिछले तेरह वर्षों से उन्होंने टैक्स नहीं दिये। अब तक उन पर आठ लाख सोलह हजार रूपये टैक्स के बाकी हैं। ब्रिटिश राज ने उन्हें बिना किसी लाइसेन्स को फायर आर्म्स रखने का अधिकार दिया....यही है उनक राष्ट्रीय संग्राम...! (उठ खड़े होते हैं और जैसे इस कमरे से निकल जाना चाहते हैं।)

गयादत्त : फायर आर्म्स में क्या है ? वह तो महज एक इज्जत की बात है।

राजन : टैक्स न देना तो अब इज्जत की बात है !

गयादत्त : धीरे बोलिये...भीतर पिताजी होंगे, बाहर केजरीवाल का जनरल मैनेजर खड़ा है।

राजन : मुझे पता है, मेरे भीतर–बाहर कौन–कौन खड़े हैं।

गयादत्त : बात यह है कि मैं नहीं चाहता, आपसे ऊपर तक जाऊं।

राजन : ऊपर जाने के लिए ही तो आपका जन्म हुआ है। कान खोलकर सुन लीजिए...अब तक आपके दोस्त केजरीवाल की कॉटन मिल का गोदाम सील कर दिया गया होगा।

गयादत्त : यह आपने क्या किया ?

राजन : अब आप जा सकते हैं।

गयादत्त : पर क्या यह सच है ? (विराम) अगर यह सच है, तो मैं आपकी बेहतरी के लिए सलाह देता हूं...यह आर्डर वापस लीजिये।

राजन : गैरमुमकिन.....

गयादत्त : आप सब सोच–समझ लीजिये।

राजन : कायदे से बात कीजिये।

गयादत्त : ठीक है।

राजन : यह आपकी सरकार है। यह 'फूल कैबिनेट डिसीजन' है कि तमाम बकाया टैक्स वसूल किया जाय। मैं एक तरह से आपकी ही आज्ञा का पालन कर रहा हूं।

गयादत्त : जनाब, आप आज्ञा और इच्छा को फर्क को नहीं समझते।

(विराम)

गयादत्त : आप चाहते क्या है ?

राजन : आपसे मतलब !

गयादत्त : दरअसल मैं आपका ही आदमी हूं, आप चाहे मुझसे मतलब रखें या न रखें।

राजन : बंद कीजिये बकबास...मैं अकेला ही काफी हूं।

गयादत्त : आपको पता नहीं आपने सब कुछ हमारे हाथों में सौंप दिया है।

राजन : आपने भी सब कुछ हमारे हाथों में सौंप दिया है। हम कहीं भी एक फाइल दबाकर आपकी सारी योजना ठप्प कर सकते हैं।

गयादत्त : हमें पता है....फिर भी आपको मुझसे मदद लेनी चाहिए....

(दरवाजे पर पिताजी दिखते है।)

गयादत्त : ओह ! वकील साहब....नमस्ते। मैं अभी आपको ही पूछ रहा था। कहिए, सब आन्नद मंगल ?

पिता : सब मेहरबानी है...आप लोगों ने यहां क्या कर दिया ?

गयादत्त : क्या कर दिया ?

पिता : आपने झूठ–मूठ मंत्रीजी से...

गयादत्त : वकील साहब, आप तो इत्ता जमाना देख हुए हैं, वह बात इनकी बेहतरी के लिये की.....आखिर तरक्की कैसे होती ! इतने काम, नाम, कब तक यहां वही कलक्टर बने रहते....!

राजन : अच्छा हो, आप लोग बाहर जाकर.....

गयादत्त : आइए, आइए, मैं बताता हूं....आपसे क्या कहूं...

(दोनों बाहर जाते हैं। श्री भी जाता है।)

राजन : (फोन करते हैं) एस0पी0 साहब को देना...मिस्टर राठौर, वह हरिजन बस्ती वाले मामले में क्या हुआ ? हूं..हूं... निहायत सख्ती से काम लीजिये। ब्राह्मणों ने उनकी बस्ती फुंकवायी है...कोई दलील नहीं। सबको हिरासत में लीजिये....!

(इस बीच विमल भीतर से आकर सोफे पर बैठ गयी हैं।)

राजन : (दूसरा फोन) ए0डी0एम0 साहब, वहां आप गये थे। जी हां...जी...हां, वह ऑर्डर मैं खुद टाइप कर रहा हूं....स्टेनों की कोई जरूरत नहीं। पेशकार को बोल दिया है। जी...जी..हां, मैं यहां का अपना सारा काम पूरा करके ही जाऊंगा. ...कोई परवाह नहीं...जी हां, बिल्कुल फैसला कर लिया है...(टेलीफोन रखते है।)

विमल : मिसेज राठौर का टेलीफोन आया था। वह हमारी कार खरीदना चाहती हैं। हमें भी अब नयी कार लेनी चाहिए।

राजन : विमल, हमने अब तक क्या तैयारी की है ?

विमल : शुक्र है, आज पूछा तो....

राजन : तुम्हें याद है न, शादी से तीन दिन पहले की वह बात.....मैंने कहा था––कलक्टर हो जाने के बाद इस नौकरी से बाहर आ जाऊंगा।

विमल : तुम कब की बातें करते हो ?

राजन : मैं भी तब से वह भूल ही गया....मुझे तब इतना नहीं पता था कि यहां हर मूल्य की जड़ में वही गुलामी है। आज्ञाकारी होना किसी ऐसे चक्रव्युह में पैर रखना है...मुझे इस धोखे का पता नहीं था। अब बोलो, हमने यहां से जाने की क्या तैयारी की है ?

विमल : मैंने तैयारी की है।

राजन : सच !

विमल : कॉन्वेन्ट होस्टल में दोनों बच्चों को सारी फीस भेज दी है। 'प्रोपर्टी' डीलर' के हाथ कुछ पुरानी चींजे साढ़े चार हजार में बेच दी हैं। वहां साढ़े हैं। वहां पहुंचकर इस पूरी रकम में थोड़ा–सा ही और मिलाकर नयी मॉडल....

राजन : वहां पहुंचकर ? कहां....?

विमल : अपनी कमिश्नरी में।

राजन : ओह !

विमल : इन्श्योरेन्स एजेण्ट को बुलाकर कह दिया है–हम एक पॉलिसी और लेंगे। बैंक के सारे एकाउण्ट्स के कागजात मंगा लिये हैं, और बैंक को लिख भी दिया है।

राजन : मैं इस तैयारी की बात नहीं कर रहा था। मैं इसी में से बाहर निकलने की.....

विमल : आप इन फिजूल की बातों में.....

राजन : फ्रिज, कार, इन्श्योरेन्स, स्टेटस आखिर किसलिये, क्यों ?

विमल : फिर इस नौकरी में क्यों आये ?

राजन : आना पड़ा....!

विमल : आना पड़ा....!

राजन : विमल !

विमल : जो जहां है, वहां से निकलने को ढोंग इसलिये करता है कि वह अपने को स्वंय से बड़ा साबित करना चाहता है।

राजन : (निरूत्तर)

(फोन की घंटी)

विमल : हेलो....ट्रंककाल.....सेक्रेटरी के यहां से....लीजिये, बात कीजिये साहब से।

राजन : नमस्ते....जी हां...सही है...गोदाम सील करा दिया है। फायर आर्म्स भी...जी...जी...आपको याद होगा, खास तौर पर मुझे इस जिले का चार्ज दिय गया था....आपके सीक्रेट ऑर्डर्स भी हैं मेरे पास। जी...मैं औरों की तरह कैसे होता। जी...जी....आप ऑर्डर कीजिये, सब हो जायेगा। जी नहीं, वह मै हर्गिज नहीं कर सकता। (टेलीफोन रख देते हैं।)

विमल : जैसी सरकार होगी, हमें उसी तरह रहना होगा। हमें भी आपना फर्ज पूरा करना चाहिए।

राजन : सबने यही कहा है।

विमल : तुम्हें 'कम्पलीट रेस्ट' की जरूरत है।

राजन : यस–आई विल रिजाइन।

विमल : रिजाइन करने के लिये कोई ठोस बहाना चाहिए।

राजन : बहाना नहीं, संकल्प।

विमल : आप एकाएक क्यों इस तरह 'रिजाइन' करना चाहते हैं, लोग क्या कहेंगे ?

राजन : मेरा ऐसा कोई दूश्मन नहीं।

विमल : हर जिन्दगी के साथ दुश्मन अपने–आप पैदा हो जाते हैं, जिन्दगी की बनावट ही ऐसी है।

राजन : तुम ठीक पिताजी की तरह बातें करती हो। (विमल चुप हैं।) जो आया है, वह जा भी सकता है। मैंने कभी किसी के साथ काई बेहन्साफी नहीं की है। मेरे कितने दोस्त हैं, घर है, परिवार है...क्या नहीं है मेरे पास ?

विमल : अपने से बाहर के लोग सिर्फ हमारी बाहरी चीजों से जुड़े होते हैं।

राजन : तुम्हारे खयालात इतने छोटे होते हैं।

विमल : देखा नहीं, 'रिजिग्नेशन' की बात सुनते ही दौड़े हुए पिताजी आये।

राजन : मैने उनसे साफ कर दिया।

विमल : अपने बच्चों से कैसे कहोगे ?

राजन : जैसे सबके बच्चे घर में रहकर पढ़ते हैं, वे भी रहेंगे।

विमल : और मुझे क्या कहोगे ?

राजन : तुम्हें....?

(सन्नाटा)

विमल : हमने प्रेम–विवाह किया है। तुम मुझे अभाव में नहीं रख सकते। तुम्हारे सारे दोस्त–रिश्तेदार ऐसे हैं, जिनके बच्चे केवल कॉन्चेन्ट में पढ़ते हैं, जिनकी बड़ी–बड़ी शादियां हुई हैं....तुम ईमानदार, जिम्मेदार और जज्बाती इन्सान रहे हो. ....तुम्हारे कुछ अपने उसूल भी रहे हैं...उनके लिये हमने.... (तेजी से अन्दर जाती हैं। पृष्ठभूमि से गयादत्त और पिताजी के तेज हंसने की आवाज आती है। धीरे–धीरे प्रकाश राजन पर से बुझ जाता है।)

दूसरा दृश्य

वही स्थान। उसी दिन की संध्या। सूने मंच पर फोन की घंटी बजती है। श्री आकर उठाता है।

श्री : हलो....ओह, नमस्ते मेम साहब ! जी, इस वक्त बंगले में कोई नहीं है। जी, मेम साहब आयेंगी तो जरूर कह दूंगा... हां, क्यों नहीं...जी हां.....

(दायीं ओर से राजन का प्रवेश। श्री फोन रखता है।)

श्री : मिसेज राठौर का फोन था...

राजन : पिताजी को बुलाना।

श्री : हजूर बाहर गये हैं.....केजरीवाल के यहां चाय पर।

राजन : क्या ?

श्री : उनकी गाड़ी आयी थी, करीब चार बजे।

राजन : तुमने देखा है, वह गाड़ी थी, जिससे सुबह पिताजी यहां आये थे ?

श्री : जी हां, वही गाड़ी थी।

राजन : मेम साहब को बुलाओ। (सोफे पर बैठते हैं।)

श्री : हजूर मेम साहब मार्केट गयी हैं।

राजन : पिताजी मेम साहब के सामने गये हैं ?

श्री : जी हां।

राजन : मेम साहब को पता था, पिताजी कहां जा रहे हैं ?

श्री : कह नहीं सकता हजूर !

राजन : पानी पिलाओ।

(श्री अन्दर जाता है। राजन उठते हैं। आफिस मेज परसे कोई कागज पढ़ते हैं। उसे फाड़ देते हैं। दूसरा कागज टाइपराइटर पर चढ़ाकर तेजी से टाइप करने लगते हैं। श्री आता है पानी लिये खड़ा रहता है। बायीं ओर से विमल का प्रवेश। हाथ में दो–तीन पैकेट हैं। राजन पानी पीते हैं।)

विमल : ओफ...थक गयी। (सोफे पर बैठती हैं।)

राजन : (आते हैं) पिताजी कहां गये ?

विमल : अब तक नहीं आये क्या ?

राजन : गये कहां ?

विमल : केजरीवाल के यहां चाय पर गये हैं।

राजन : क्यों गये ?

विमल : (चुप)

राजन : उसे कैसे मालूम, पिताजी यहां आये हैं ? उसकी गाड़ी यहां आयी थी ?
तुमने मुझे टेलीफोन क्यों नहीं किया ? वह कैसे, क्यों गये ?

विमल : मुझे क्या मालूम ?

राजन : पिताजी यहां आये कैसे थे ? ट्रेन से या.....?

विमल : (चुप)

राजन : वह घर से यहां केजरीवाल की ही गाड़ी से आये––यह तुमने भी मझे नहीं बताया !

(सन्नाटा)

विमल : केजरीवाल की पिताजी से जान–पहचान है।

राजन : तो...वह टैक्स केस में वकालत करने गये हैं ! अगर कुछ ऐसा–वैसा किया तो....

विमल : वह कह रहे थे....

राजन : उन जैसे बीसियों वकील उसके यहां नौकरी करते हैं...मुझे डर है, पिताली कुझ कर न बैठैं....श्री ! केजरीवाल की कोठी पर फोन मिलाना।

(श्री फोन करता है।)

राजन : मिल गया ?

श्री : जी हजूर, घंटी बज रही है।

राजन : पिताजी को बुलाना.....

श्री : जी हां, हैलो देखिए, वहां कलक्टर साहब के पिताजी हैं क्या ? जी..(फोन पर हाथ रख) हुजूर, केजरीवाल साहब आपसे...

राजन : नहीं....पिताजी को बुलाओ....

श्री : (फोन पर) हलो...पिताजी को जरा बुला दीजिए साहब ! (हाथ रखे) वह आपसे बात करना चाहते हैं।

राजन : मुझसे....?

(टेलीफोन लेकर बात करने का प्रयत्न, पर सहसा फोन रख देना।)

विमल : पिताजी इतने भोले–भाले नहीं है कि वह उन्हे फंसा ले जाय।

राजन : मैं भी इतना भोला–भाला नहीं था, पर पिताजी ने मुझे किस तरह फंसाया ! और कर्तव्य के मूल्य पर मैं खुद यहां कितना फंसा !

(विराम)

विमल : (उठकर) साहब ने चाय पी ?

श्री : जी नहीं।

(विमल जाने लगती हैं।)

राजन : मार्केट में किसी का कोई बिल तो नहीं बाकी है ?

विमल : सिर्फ सांवलदास के यहां हिसाब करना था। अजीब ढंग से उल्टे–सीधे एकाउण्ट्स बना रखे थे। संयोग से वहां गयादत्तजी आ गये.....

राजन : और झट सारा एकाउण्ट ठीक हो गया।

विमल : क्या ?

राजन : मेरा सिर !

विमल : यह क्या हो जाता है तुम्हें ?

राजन : जरा यह पैकेट दिखाना। (लेकर) सांवलदास...(पैकेट को फाड़ते हैं। उसमें रखी साड़ी को हवा में खींचते हुए) श्री, सांवलदास को मिलाना।

(श्री नम्बर देखकर फोन करता है। विमल भीतर चली गयी हैं।)

राजन : उनसे कहना, यहां आकर अपना हिसाब कर जायें।

श्री : (फोन पर) सांवलदास जी....मैं कलक्टर साबह का चपरासी बोल रहा हूं। साहब का हुक्म है कि यहां आकर अपना हिसाब कर जाइए...जी..जी...(थमकर) हजूर, सांवलदासजी बोल रहे है कि अब कोई हिसाब बाकी नहीं है।

राजन : (खुद फोन लेकर) अभी मेम साहब जो हिसाब करके आयी हैं, उसे कैंसिल कीजिये, और हमारा सारा हिसाब लेकर आइये और पेमेण्ट ले जाइए।

(फोन रख देते हैं।)

राजन : (सहसा) कौन ?

श्री : (देखकर) पिताजी।

राजन : साड़ी उधर करो।

(श्री साड़ी बटोकर बायीं ओर रखता है। दायीं ओर से पिताजी आते हैं।)

राजन : आपको वहां जाने की क्या जरूरत थी ?

पिता : बेटे, उनसे मेरा पुराना रिश्ता है। वहां इनकी शुगर मिल के सारे केस मैं ही देखता हूं।

राजन : (पिताजी का मुंह देखते रह जाते हैं।)

पिता : केजरीवाल इतने बुरे नहीं हैं....

राजन : आपको जब वहीं वकील बने रहना था, तब मुझे इस तरह की नौकरी में क्यों डाला ?

पिता : बेटे, तुम कुछ समझते नहीं।

राजन : उसने क्या–क्या कहा ?

पिता : वह क्या कहते ?

राजन : आपने उससे क्या–क्या कहा ?

(पिताजी हंसते हैं।)

राजन : (घबराकर) पिताजी !

पिता : भाई, मै इतना बेवकूफ नहीं ।

राजन : जहां आप दोनो बैठे बातें कर रहे थे, वहां कोई और था ?

पिता : कोई और ?.....उसे टेपरिकार्डर ही कहते हैं न, सिर्फ उसी में से संगीत बज रहा था। उन्होने तब खुद बन्द कर दिया.....

(राजन की घबराहट और बढ़ जाती है।)

पिता : बेटे, कहीं कुछ फर्क नहीं पड़ता। बहुत पुरानी और न जाने कितनी बड़ी यह दुनिया है, इसकी कोई थाह नहीं। जो कुछ भी कोई कह दे, हमें उसी पर यकीन करना पड़ता है। और जहां तक इन्सान की तरक्की की बात है.... उसने तरक्की–फरक्की कुछ नहीं की है। वह सिर्फ तरक्की, तहजीब, तमद्दुन का नाटक खेलता चला आया है। बुनियादी तौर पर दरअसल वह वहीं खड़ा है। वही डर, वही भूख, वही.....कुछ फर्क नहीं पड़ता। बहुत पुरानी और न जाने कितनी बड़ी यह दुनिया है, इसकी कोई थाह नहीं। जो कुछ भी कोई कह दे, हमें उसी पर यकीन करना पड़ता है। और जहां तक इन्सान की तरक्की की बात है....उसने तरक्की–फरक्की कुछ नहीं की है। वह सिर्फ

तरक्की, तहजीब, तमद्दुन का नाटक खेलता चला आया है। बुनियादी तौर पर दरअसल वह वहीं खड़ा है। वही डर, वही भूख, वही...

राजन : केजरीवाल से आपकी क्या बातचीत हुई, वह याद नहीं है ?

पिता : तुम्हे सारी चीजें याद हैं, तभी तो इतने दुखी हो। मैं कहता हुं, दुनिया जहन्नुम में जाय, तुमसे क्या ?.....मुझसे क्या है हमारे अधिकार में ? हमारी क्या ताकत है ? इस ब्रह्माण्ड में हम सुई की नोक का करोड़वां हिस्सा भी तो नहीं हैं. ....हंह...!

राजन : श्री, इन्हें अन्दर ले जाओ।

पिता : चल, हट बे !

(कोई शेर गुनगुनाते हुए अन्दर चले जाते हैं। राजन क्षण–भर बाद फोन करते है।)

राजन : हलो, एस0पी0....केजरीवाल की कोठी में अभी 'रेड' करो....कैसे भी हो....उसके 'टेपरिकॉर्डर' में कुछ बड़ी इम्पॉर्टेन्स बातें हैं। कोई भी 'टेप ' छोड़ना नहीं है....अभी...तुरन्त ! (फोन रखते हैं। फिर बढ़कर एक कागज उठाते हैं, पर पढ़ नहीं पाते।) मैं क्या कहूं..उत्तर देने का वह वक्त आ गया है। मैं इस सबको बहुत पहले बता देता, पर मैं अपने उसूलों से मजबूर था....पर ये उसूल क्या हैं ? खुद अपनी नज़र में ऊंचे उठे रहने की बैसाखी के अलावा और क्या है ?.....कहते हैं, राजनीति ने देश को बरबाद किया....

(विमल तेजी से निकलती हैं।)

विमल : सुनिये....सुनिये...पिताजी क्या–क्या बक रहे हैं ?

राजन : धर्म से सवाल नहीं करते।

विमल : चलकर सुनो तो सही।

राजन : वे भाग्यशाली हैं।

विमल : उन्हें मना कर दो।

राजन : वे मेरे पिता है।

विमल : यह गलत है।

राजन : मैं कुछ नहीं कर सकता।

विमल : क्या ?

राजन : (निशब्द)

विमल : तुम कुछ.....

राजन : मेरे गले के भीतर....(कुछ अटक–सा गया है) जैसे कोई व्यवस्था घर कर गई हो, और मैं उसके चारों ओर केवल बातों से पहरा देता रहा हूं.....मैं फिर भी अपनी वह बात नहीं कह पाया। तुम कह लेती हो, पिताजी कह लेते हैं.....

विमल : राजन !

राजन : (निःशब्द)

दूसरा अंक

□

पहला दृश्य

वही स्थान। दूसरे दिन का समय। टेपरिकॉर्डर चल रहा है। उसमें से कभी संगीत उठता है, कभी बातें, कभी शोर, कभी हंसी... ..कभी अजीबोगरीब संवाद और अवाजें। राजन मुर्तिवत् सुन रहे हैं। भीतर से विमल आती है। राजन के पीछे खड़ी हो जाती है।

विमल : (अतयन्त स्नेह से) अब तक यह 'टेप' खत्म नहीं हुआ ?

राजन : (पीछे हाथ उठाकर विमल को बांधकर सिर हिलाते हैं।)

विमल : बंद भी करो। (बढ़कर टेप मशीन बन्द कर देती है।)

विमल : पिताजी की इच्छा आज जाने को नहीं थी। मैं उनके पैर छूने बढ़ी, उन्होने भरी आंखों से मुझे आशीष दिया, 'बहू' सब कुछ तुम्हारे ही अधिकार में है' (हंस पड़ती हैं।)। आज तुमने दाढ़ी नहीं बनायी ? यह क्या सूरत बना रखी है ! 'बोर कहीं के !

(राजन की हंसी। उसी समय फोन आता है।)

विमल : (फोन पर) ओह....हैलो मिसेज राठौर ! डिनर पार्टी ? जरूर....जरूर...आप आइए तो सही....प्रोग्राम बनाते हैं। जरूर आइए। (फोन रखती हैं।)

राजन : विमल, याद करो, हम इस नौकरी में आये–आये ही थे। वह छोटा –सा बंगला याद है न, उस कमरे की खिड़की खोलते ही गंगा का वह दूधिया कछार लहराने लगता था।

विमल : कितना बेकार था वह बंगला ! हमारी शादी में जितने सारे समान मिले थे, उनके रखने तक की भी जगह ने थी। सारे कीमती सामान उतने दिन तक पापा के घर पड़े थे।

राजन : उस कमरे में रहना कितना अच्छा लगता था !

विमल : गंगा की सारी धूल कमरे में आती थी।

राजन : खिड़कियां खोलकर सोना स्वर्ग जैसा लगता था।

विमल : कितने मच्छर थे वहां !

राजन : और हमें मच्छर दानी लगाकर सोना विल्कुल नापसंद था !

विमल : जंगली कहीं के !

राजन : क्यों ? बताओं....।

विमल : वहां का 'एन्वायरन्मेण्ट' ऐसा था... जंगल–जैसा।

राजन : तभी मैं जंगली था, और तुम थीं जंगल की मोरनी। मैं कहीं भी तुम्हें पकड़ लेता था, फिर हम कहीं खो जाते थे।

विमल : वह एस0डी0एम0 का बंगला था, यह डी0एम0 का बंगला है ! ....और यह बाहर का कमरा है...जहां तुमने अपना ऑफिस भी घुसा रखा है। जगह और वक्त का ख्याल तो हमें होना ही चाहिए। हर काम के लिये अलग–अलग जगहें होती हैं। उसके लिये वैसा माहौल होता है। इसीलिए एक मकान में इतने कमरे बनाये जाते हैं। और उनके मुताबिक चीजें होती हैं।

राजन : इस तरह 'एन्वायरन्मेण्ट' बनाया जाता है। पर उसे पहले बंगले में ऐसा कुछ नहीं था।

(विराम)

विमल : वह हमारा पहला बंगला था।

राजन : उसके बाद हर 'ट्रांसफर' में बड़े से बड़े बंगले मिलते गये और 'एन्वायरन्मेण्ट' पूरा होता गया....।

विमल : वह बहुत जरूरी है।

राजन : किस चीज के लिए वह जरूरी है ?

विमल : बन्द भी करो...मेरा तो मुंह दुखने लगा।

राजन : हम वही चीज भूलते गये, जिसके लिए हमने इतना सारा 'एन्वायरन्मेण्ट' बनाया। (सहसा) तुम अब इस तरह के ब्लाउज क्यों पहनती हो ?

विमल : यू लाइक इट ?

राजन : पहले तुम इस तरह के ब्लाउज नहीं पहनतीं थीं।

विमल : यू नो, नेसेसिटी इज द मदर ऑफ इनवेंशन।

राजन : यानी यह ब्लाउज नहीं, इन्वेंशन है !

(दोनों हंस पड़ते हैं।)

राजन : बाहर देखो, कितना अच्छा मौसम है !

विमल : कपड़े बदलकर आती हूं, घूमने चलंगे।

राजन : ऐसे ही चलो। बिलकुल इसी वक्त, इसी तरह।

विमल : हाय, काई देखेगा तो क्या कहेगा ?

राजन : क्या कहेगा ?

विमल : मिसेज राठौर को देखा है, जब वह बाहन निकलती हैं तो.....

राजन : तुम विमल हो....दी विमल !

विमल : सारा ग्रामर भूल गये। 'प्रॉपर नाउन' के पहले 'दी' नहीं लगता...अपने चारों ओर के लागों को हर वक्त हमें ध्यान में रखना पड़ता है।

राजन : तभी ग्रामर का वह सिद्धान्त बना है....(सायास) तुम्हारे ये हाथ कितने सुन्दर हैं ! तुम उस बंगले में इन्हीं उंगलियों से सितार बजाती थीं।

विमल : सितार भीतर ड्राइंगरूम में रखा है...मिजराब भी है।

राजन : और अब 'एन्वायरन्मेण्ट' भी पूरा है !....तो ले आओ सितार, बजाओ वही खम्माच..वही जैजैवन्ती।

विमल : पर अभी, इसी वक्त कैसे ?

राजन : अभी किस चीज की कमी है ?

विमल : तुम बच्चों की तरह बातें करते हो।

राजन : आज एक क्षण के लिए मुझे बच्चा मान लो।

(हाथ की पकड़ तेज हो जाती है विमल हंसती हैं। राजन की पकड़ सहसा ढीली हो जाती है।)

विमल : तब इन हाथों को तुम इतनी आसानी से नहीं छोड़ते थे। इसे छूते ही दोनों के हाथ जैसे कांपने लगते थे....तुम मुझे खींचकर अपने अंक में....

राजन : तब यह 'एन्वायरन्मेण्ट' नहीं था।

विमल : पर उसके लिए बेहद जरूरी था।

राजन : बस....बस, बन्द करो यह नाटक हम बातों से इस शून्य को नहीं भर सकते।

विमल : बातें तुमने शुरू कीं।

राजन : वजह तुम हो।

विमल : पर बुलियाद तुम हो।

राजन : गलत ! जो आज मेरे चारों ओर वह मैने नहीं चाहा।

विमल : तुमने इसका विरोध कब किया ?

राजन : विमल !

विमल : तुमने जो–जो चाहा, वही–वही मैं बनती गयी। वही–वही चीजें तुम्हारे चारों ओर आती गयीं....यह टूटी हुई मूर्ति, यह तस्वीर तुम्हारी ही पसंद है !....मैं सब कुछ वही करती गयी....वही बनती गयी..जो तुमने पसन्द किया। यहां तक कि कपड़े भी मैने तुम्हारी पसंद के पहने। मैं तो आज तक कुछ नहीं बोली.....

राजन : मैं ही कब.....?

विमल : पर क्यों नहीं कभी....?

(सन्नाटा)

विमल : जब से नौकरी में आये, दिन–रात वही काम..काम...काम...!...और कोई कुछ जैसे इस दुनिया में है ही नहीं।

राजन : मैं औरों की तरह नहीं हो सकता।

विमल : तभी मुझे इतने 'एन्वायरन्मेण्ट' की जरूरत महसूस होती रही। और मैं....

राजन : विमल !

विमल : तुम सोचते हो यहां से बाहर कुछ और है, जैसे इतने वर्षों में अभी तक वह बाहर नहीं देखा।

राजन : कहां देखा....कैसे देखा ?

विमल : क्यों नहीं देखा ?

राजन : यह नौकरी, मैं, तुम सब लोग मुझे घेरे रहे। किसी ने आज्ञा दी, वही अहंकार जागा, किसी ने पुकारा, किसी ने देखा, किसी ने....

विमल : आत्मन, गयादत्त, केजरीवाल....पिताजी....जी....मैं...

राजन : क्या बकती हो ?

विमल : तुम्हारे हिसाब से ये सब लोग बाहर खड़े हैं।

राजन : उस बाहर को तुम नहीं समझ सकतीं।

विमल : क्योंकि मैं अन्दर नहीं हूं।

राजन : तुम्हें क्या ?

विमल : (हंसकर रह जाती हैं।)

राजन : आत्मन, गयादत्त.....

विमल : अगर तुम यहां न आते, तो इन्हीं दोनों में से किसी एक तरह होते।

राजन : विमल !

विमल : मैं मजाक कर रही हूं।
राजन : थैंक्स्।
विमल : अच्छा चलों, इसी तरह घुम आएं अच्छा, सितार ले आती हूं....चलो, तुम्हें आज एक क्षण के लिए बच्चा ही मान लेती हूं।
राजन : थैंक्यू वेरी मच.....

(विमल भीतर चली जाती हैं। राजन की आंखे बंद हैं। मंच का सारा प्रकाश राजन पर टिक गया है। सहसा उस अंधकार में से आत्मन प्रकट होता है।)

राजन : तुम.....आत्मन !
आत्मन : पहचान लिया !
राजन : सोचता हूं....
आत्मन : यहां से अब बाहर जाना चाहते हो ?
राजन : हां।
आत्मन : आओ, चलो बाहर।
राजन : काई रास्ता है क्या ?
आत्मन : रास्ता चलने से बनता है।
राजन : रास्ता चलने से बनता है।....पर वे लोग मुझे एकटक देख रहे हैं।
आत्मन : देखने दो।
राजन : वे अपने ही लोग हैं।
आत्मन : वे स्वार्थी हैं।
राजन : मैं उन्हें प्यार करता हूं।
आत्मन : अच्छा, पैर तो उठाओ....
राजन : कैसे ?
आत्मन : इस तरह।
राजन : अच्छा, अब इसे कहां रखूं ?
आत्मन : आगे जमीन है।
राजन : उठे हुए पैर और नयी जमीन के बीच यह जो शून्य है.....

(आत्मन हंस पड़ता है।)

राजन : तुम हंस पड़े न ! तुम मुझे नहीं जानते।
आत्मन : कैसे जानता ?.....तुम इधर नौकरी में आये, मैं उधर राजनीति में छूट गया...तुम इधर जी–जान से घर–गृहस्थी सजाने लगे, दिन–रात नौकरी करते रहे, मैं उधर विरोध में जा फंसा....रास्ते में कई बार देखा था, तुम मुझसे आंख बचाये भागे चले जा रहे थे....मैंने कई बार पुकारा। कई बार तुम्हें....
राजन : मैंने तुम्हें अकसर देखा है––भाषण देते हुए, बहस करते हुए, कहीं जुलूस की पहल करते हुए....दफा एक सौ चौवालीस को तोड़ते हुए....नामिनेशन पेपर्स पर मेरे सामने दस्तखत करते हुए....और जमानत जब्त होने पर कही...
आत्मन : यही तो तुम्हारी चेतना थी....स्वतंत्रता के बाद आजादी की लड़ाई शुरू होती है।
राजन : यह चेतना मेरी अब तक है।
आत्मन : झूठ ! तुमसे अब मेरा कोई रिश्ता नहीं। चौदह वर्ष हुए....मैं तुमसे बहुत दूर छूट गया.....
राजन : मैं बिलकुल अकेला हूं।
आत्मन : कोई जगह खाली नहीं रहती...वहां कोई आगन्तुक आ गया होगा।
राजन : तुम कैसी बेसिर–पैर की बातें करते हो।
आत्मन : तुम्हें यहां से बाहर निकलने के लिए कोई बहाना चाहिए न.....यह लो पिस्तौल और मुझे मार दो।
राजन : (भयभीत).....तुम आत्महत्या करोगे ?
आत्मन : इस दुनिया में विजयी होने का और कोई रास्ता नहीं।
राजन : यही वह बाहर है, जहां तुम मुझे ले जाना चाहते हो ?

(दूसरी ओर सहसा अंधकार में से गयादत्त प्रकट होता है।)

गयादत्त : पर क्या यही तुम्हारे भीतर नहीं ?
राजन : यहां मैं सुरक्षित हूं।
आत्मन : पर मैं सुरक्षित नहीं।
राजन : यह मेरी जिम्मेदारी नहीं।
गयादत्त : मेरी भी नहीं।
आत्मन : मेरी भी नहीं।

राजन : तुमने ऐसा होने क्यों दिया ?
गयादत्त : तुमने क्यो होने दिया ?
आत्मन : शक्ति किसके पास थी ?
राजन : तुम्हारे पास....तुम आजाद थे।
गयादत्त : तुम इतने बड़े अफसर थे।
आत्मन : (एक साथ) टीक, बिल्कुल ठीक।
गयादत्त : निजी शक्ति के स्तर पर ही एक–दूसरे से बड़ा होना हमारा लक्ष्य था और इस तरह हम एक–दूसरे से कट गये।
राजन : तुमने काटा।
गयादत्त : तुमने ! (राजन को) तुमने मेरा साथ नहीं दिया।
आत्मन : (राजन से ही) तुमने मेरे संग विश्वासघात किया। आंख मूंदकर मुझे इसके हाथों सौंप दिया।
गयादत्त : मैं अकेला कहां–कहां लड़ता रहा।
राजन : मै भी दिन–रात लड़ता रहा।
गयादत्त
आत्मन : उसी व्यवस्था को बनाये रखने के लिये।
राजन : नहीं।
गयादत्त : अब बताओ, सबसे ज्यादा ताकतवर कौन है ?
राजन : तुम !
गयादत्त : तुम !
आत्मन
गयादत्त : तुम !
गयादत्त : अपने से हमें अलग कर अब अकेले बाहर जाना चाहते हो ! पता है, बाहर क्या है ? मैं !
आत्मन : मैं हूं।

(भयभीत राजन की आंखें फिर बंद हो जाती हैं। वे दोनों अदृश्य हो जाते हैं। राजन तेजी से बाहर चले जाते हैं। एक क्षण के लिये मंच पर अंधकार छा जाता है। जब प्रकाश लौटता है––विमल भीतर से निकलती हैं, जैसे किसी को ढूंढ़ रही हैं।)

विमल : मिसेज राठौर !.....मिसेज राठौर !.....ओह, आप कहां छिपी थीं ?
मि0 राठौर: बड़ी इन्ट्रेस्टिंग मैगजीन है। लगता है, आपको भी हिन्दी फिल्मों से बहुत शौक है। हाय ! यह हीरो देखिये, कहां से आ गया। कमाल है.....!
विमल : मैं इंगलिश फिल्में ज्यादा देखती हूं।

(विराम। पृष्ठभूमि से पुकार आती है।)

पुकार : बहू !.....बहूरानी....!
विमल : आयी, पिताजी !
मि0 राठौर: ससुरजी कब आये ?
विमल : आज दोपहर में।

(भीतर जाती हैं। मिसेज राठौर मैगजीन देखते–देखते एक फिल्मी गाना गुनगुनाने लगती हैं। विमल आती हैं।)

मि0 राठौर: कल डिनर का इंतजाम किसे दिया है।
विमल : पिताजी का खयाल है, डिनर का सारा इंतजाम किसी अच्छे 'कैटरर' को दिया जाना चाहिए। वह तो चाहते हैं कि. .....
मि0 राठौर: मिस्टर राजन का क्या खयाल है ?
विमल : उनका खयाल ? (हंस पड़ती हैं) बस, सब कुछ चुपचाप। कहीं 'लीकआउट' नहीं, हां।
मि0 राठौर: यह कैसे हो सकता है ! मैं उन्हें ऐसे अंदाज से बताऊंगी कि..... (हंस पड़ती हैं।)
विमल : आजकल डिनर में 'बुफे सिस्टम' ही ठीक रहता है।
मि0 राठौर: जी हां, जो जहां चाहे, खड़े होकर बैठकर बड़े इम्तीनान से खा–पी सकता है।
विमल : एक–दूसरे को देखने–दिखाने का मौका भी मिलता है।
मि0 राठौर: जो जिसको चाहे घुम–फिरकर बातें कर सकता है।
विमल : और किसी से बोलने की इच्छा न हो तो, सबके बीच में चुप भी रह सकता है।

(हंसी)

मि0 राठौर: और उस खामोशी को भरने के लिए बड़े मजे से प्लेट पर चम्मच खनक सकता है।

(हंसी)

विमल : मेरा खयाल है, एक–दूसरे से न बोलने के लिए ही लोग पार्टियों में बोलते हैं।

(विराम)

मि0 राठौर: आपकी आया कहां गयी ?

विमल : हटा दिया, ड्राइवर के साथ रोमांस करने लगी थी।

मि0 राठौर: आया लोग भी बहुत तंग करती हैं।

विमल : आपने जूड़ा किससे बनवाया ?

मि0 राठौर: खुद बनाया है, क्यों ?

विमल : पहले मैं भी इसी तरह बनाती थी, अब लेटेस्ट यह है।

मि0 राठौर: जी नहीं, फिर यही लौट अया है। दरअसल इस जूड़े के बैकग्राउंड में चेहरे पर एक खास बात पैदा हो जाती है।

(विराम)

विमल : मेरी कार आपको पसंद है ?

मि0 राठौर: पसन्द तो है, लेकिन फिर सोचा, 'लेटेस्ट' मॉडल' ही क्यों ने लें !

विमल : मैने भी फिर सोचा, वहां पंहुचकर दो कारें क्यों न रखी जायें....'मोर ओवर, दैट इज अवर लकी कार'।

(विराम)

मि0 राठौर: मिस्टर राठौर का भी प्रमोशन अब होने को है। दरअसल वह कभी का हो जाता, इन्होने जरा भी परवाह नहीं की। आई0जी0 साहब मेरे खास फूफा के 'फ्रस्ट कजिन' हैं।

विमल : सच पूछा जाये तो मिस्टर राजन का प्रमोशन अब शूरू हुआ है.....बस, एक बार शुरू हो जाय, फिर तो आदमी.....

(विराम)

विमल : आपके पास 'रेंज' नहीं है ?

मि0 राठौर: इन्फैक्ट हमें उनकी 'ब्रेड' पसन्द नहीं।

विमल : हमारे पास इतने कीमती सामान इकट्ठे हो गये हैं, इन्हें 'पैक' करना भी एक मुसीबत है।

मि0 राठौर: इसीलिये हम बेकार की चींजे नहीं खरीदते।

विमल : जिसके पास चीज ही न हो, वह उसकी कदर क्या जाने !

मि0 राठौर: मिसेज राजन , ऐसे कोई नहीं कहता ।

विमल : आपने मुझे मजबूर किया।

मि0 राठौर: पर वजह आप हैं।

विमल : आप हैं।

मि0 राठौर: आप हैं।

(उसी क्षण दायीं ओर से आत्मन के संग राजन का प्रवेश। दोनों औरतें चुप हो जाती हैं और प्रसन्नता का अभिनय करने लगती हैं।)

राजन : (प्रवेश करते ही) क्या यह मुमकिन है, केजरीवाल अपनी मिल में इस तरह 'लॉकआउट' कर दे ?

आत्मन : उसके लिये मुमकिन क्या नहीं है !

राजन : मैंने उसे कोर्ट में समन किया है।

आत्मन : इन बातों से उस पर कुछ फर्क नहीं पड़ता।

राजन : फर्क पड़ेगा। वह फर्क दिखाकर ही मैं यहां से जाऊंगा।

विमल : सुन लीजिये इनकी बातें।

मि0 राठौर: कभी–कभी ऐसे ही मिस्टर राठौर भी कह जाते है।

विमल : दोनों में बड़ा फर्क है।

आत्मन : मेरा खयाल है, होगा कुछ नहीं।

राजन : इसी विश्वास से आप राजनीति में आये हैं ?

आत्मन : राजनीति मुझे इस विश्वास पर खींच कर ले आयी है।

राजन : (सहसा) ओह मिसेज राठौर, माफ कीजिएगा।

मि0 राठौर: शुक्र है, देखा तो !.....क्या हाल हैं ?

राजन : आप बताइए।

मि0 राठौर: कल आपके यहां ग्रैण्ड डिनर पार्टी है।

राजन : डिनर ?

मि0 राठौर: हां 'फेयरवेल डिनर'। आपकी तरक्की की खुशी का डिनर।

राजन : यह क्या तमाशा है ?

विमल : आपको सब कुछ तमाशा ही लगता है !

मि0 राठौर: जनाब, यह डिनर मैंने तै किया है।

(विराम)

राजन : यह डिनर नहीं, मेरा मजाक है।

मि0 राठौर: क्या ?

विमल : कहने दो इन्हें।

राजन : कहने नहीं, मैंने वही करने जा रहा हूं।

(इस बीच आत्मन बुक–रैक के पास जाकर एक किताब पढ़ने लगे थे।)

आत्मन : रिजाइन करके आप कहां जायेंगे ?

राजन : यहां से बाहर।

आत्मन : बाहर से फिर कहां ? (लौहतरंग बजाने लगना।)

राजन : बाहर आकर आप लोगों की तरह कोई पार्टी नहीं बनाना चाहता।

आत्मन : सवाल चाहने न चाहने का नहीं, वहां भी इसी तरह अपने–आप कुछ और ही हो जाता है।

राजन : आई हेट पॉलिटिक्स.....

आत्मन : हियर – हियर.... यहीं उसकी मंशा थी।

(राजन तेजी से अन्दर जाते हैं।)

विमल : मैं अभी आयी। (भीतर जाती है।)

मि0 राठौर: जी, आपको कहीं देखा है।

आत्मन : पुलिस हिरासत में देखा होगा।

मि0 राठौर: सुना है, आप लेक्चर बहुत अच्छा देते हैं।

आत्मन : मैं ?.....जी नहीं, वह गयादत्त साहब हैं।

मि0 राठौर: ओह, सॉरी ! मैंने समझा, आप ही गयादत्त साहब हैं।

आत्मन : तारीफ के लिये शूक्रिया, कैसे भी हो।

(विराम)

मि0 राठौर: आप तो इतने बड़े 'लेबर लीडर' हैं.....आप कोई क्रान्ति क्यों नहीं करते ?

आत्मन : क्रान्ति.....इन्फैक्ट आई फील, मैन हैज कम टू सी हिमसेल्फ नाट एज ए फ्री, बट एज डिटरमिन्ड। नाट एज ए मूवर, बट एज मूव्ड। ही इज लाइक ए ब्लाइण्ड फंगस, कास्मिक वेस्ट ऑफ मैटर....

मि0 राठौर: हाय ! आप कितनी अच्छी अंग्रेजी बोलते हैं। मैं सच एक अंगेजी 'ट्यूटर' की तलाश में थी ।

आत्मन : (हतप्रभ)

मि0 राठौर: आजकल तो आप बेकार ही होंगे.....इलेक्शन से पहले आप 'विद फल पे' छुट्टी ले लीजियेगा.....'आई लव इंगलिश'.....

(आत्मन को लाचार हो भागना पड़ता है। भीतर से विमल और राजन आते हैं।)

विमल : आखिर वह तुम्हारे पिता हैं।

राजन : चारों ओर सब कोई कुछ न कुछ है !.....तब आखिर मैं क्या हूं ?

(विराम)

विमल : मिस्टर आत्मन चले गये क्या ?

मि0 राठौर: हाय ! कितनी अच्छी अंग्रेजी बोलते हैं।

(सन्नाटा। टेलीफोन की घंटी बजती है।)

विमल : हेलो..कोर्ट से !.....लीजिये, ए0डी0एम0 का फोन है।

राजन : जी हां....क्या ?....गैरमुमकिन....केजरीवाल के केस में'स्टे ऑर्डर' से क्या मतलब ! जो....पूरी फाइल के साथ ऑर्डर मेरे पास भेजिये....फौरन ? (फोन रखना)

विमल : केस सरकार का था, वह चाहे जो करे। अफसर का कोई मामला निजी नहीं होता ।

राजन : (आहत) गुलाम का कोई निजी व्यक्तित्व भी नहीं होता।

विमल : इसमें तुम्हारे दुखी होने की क्या बात है ?

राजन : मनुष्य भी तुम्हारे लिये एक पदार्थ है।

विमल : हर बात में उसी मनुष्य पर टूट पड़ते हो।

राजन : वही सबकी बुनियाद है।

विमल : तुमसे कोई क्या बात करे। जैसे तुम्हीं सरकार हो।

राजन : मैं कुछ नहीं हूं, यहीं से मैं अपनी नयी जिन्दगी शुरू करना चाहता हूं। (सन्नाटा) यहां कोई डिनर पार्टी नहीं होगी।

मि0 राठौर: पर ऐसी क्या बात हो गयी ! मिस्टर राठौर की जिन्दगी में तो आये दिन ऐसे ही केस होते रहते हैं।

विमल : दोनों में बहुत फर्क है।

(भीतर से पिताजी निकलते हैं।)

पिता : बहू, क्या है ?

विमल : उस केजरीवाल के केस में कोई 'स्टे ऑर्डर' आ गया है।

मि0 राठौर: नमस्ते...आइए, आप इधर बैठिये...अच्छा, मैं चलूंगी....फोन करना, हां...'बाई। (बायीं ओर से बाहर जाती हैं।)

पिता : कोई कर भी क्या सकता है !

राजन : मनुष्य क्या नहीं कर सकता है !

(विराम)

विमल : कहते है, अब यहां काई डिनर पार्टी नहीं होगी।

पिता : (इशारे से उत्तर देते हैं।)

विमल : लोगों की डिनर पार्टीयों में हम गये हैं, हमें भी डिनर पार्टी देनी होगी।

राजन : मैं सबसे माफी मांग लूंगा।

विमल : मैं कैसे मांगूंगी ?

पिता : राजू बेटे, बात यह है कि....

राजन : पिताजी, मैं हाथ जोड़कर आपसे माफी मांगता हूं....

(पिताजी और विमल अन्दर जाते हैं। श्री फाइल लिए आता है। फाइल लेकर राजन देखते हैं। थोड़ी देर बाद श्री आता है।)

श्री : हुजूर, गयादत्त साहब आये हैं।

राजन : कहना, वक्त नहीं है।

(श्री जाता है। राजन सोफे पर बैठे ऑर्डर पढ़ रहे हैं। सहसा बायीं ओर शोर होता है। श्री गयादत्त को भीतर आने से रोक रहा है।)

गयादत्त : उल्लू के पट्ठे, तुझे कुछ समझ भी है ! (अन्दर आते हैं।) यह क्या इन्तजाम है !

राजन : ....आप उधर तशरीफ रखिये।

गयादत्त : शुक्रिया....धन्यवाद। आज बड़ी उमस है। इस वक्त कमरे में बैठना...चलिये न, कहीं घूम आएं।

(गयादत्त ऑफिस टेबुल के पास खड़े हैं। राजन कागजात पढ़ रहे हैं।)

गयादत्त : लगता है, वही 'स्टे ऑर्डर' वाली फाइल है। कोर्ट ने केजरीवाल को इस बात पर 'स्टे आर्ड' दिया कि टैक्स का ' एससमेण्ट' ही गलत है। वह सारा फिर से 'एसस' किसा जाए, तब केजरीवाल पर कोई एक्शन लिया जाय...गोदाम सील हो जाने से बेचारे को बड़ा नुकसान हो रहा था। क्या किया जाय, सबकी अपनी–अपनी.....

राजन : डोण्ट डिस्टर्ब !

गयादत्त : कोई मेरे लायेक सेवा हो तो बताइये। बिना बच्चों के घर बड़ा सूना–सूना लगता है...सुना है, पिताजी आये हैं। बहुत बढ़िया आदमी हैं। उनसे मेरा बहुत पुरान रिश्ता है.....

राजन : क्यों ? आपके 'बाई एलेक्शन' में मैंने क्या मदद की थी ?

गयादत्त : अरे.....छोड़िये उन बातों को।

राजन : तुम्हें बताना होगा !

गयादत्त : आप इतने आला जिम्मेदान अफसर थे....

राजन : (हत्प्रभ)

गयादत्त : कुछ बहुत अच्छे अफसरों को अपने साथ रखना चाहिए। मैं धीरे–धीरे यहां से केन्द्र में पहुंचूंगा। आपको भी वहां ले जाऊंगा।

राजन : तुम्हें इसकी सजा मिलेगी।

गयादत्त : 'पेटीशन' का समय बीत गया।

राजन : मेरे पास और भी तरीके हैं।

गयादत्त : मैं ऐसे खाली बैठा हूं क्या ?

राजन : तुम्हें मेरी ताकत का पता नहीं !

गयादत्त : यही तो है मेरा काम–ताकत की डोर का पता लगाते रहना। राजनीति और है क्या ? उसके पीछे कोई दर्शन है क्या ? उसके पीछे कोई दर्शन है क्या ? (हंसना) सुना है, आप इस नौकरी से इस्तीफा देकर बाहर आना चाहते हैं। याद रखियेगा, हम उल्टे सरकार से ही आप पर मुकदमे चलवायेंगे। हम सैकड़ो आदमी आपके खिलाफ गवाही देकर जो चाहें साबित कर देंगे।

राजन : बाहर तुमसे ज्यादा आदमी मेरे साथ होंगे।

गयादत्त : (हंसकर) बेचारे पढ़े–लिखे लोग नौकरी करेंगे या किसी का साथ देंगे। बाहर निकलना किसे कहते हैं, आपको यह तक नहीं पता !.....भीतर रहकर ये आराम....ये सुख....आप इसे एक क्षण के लिए भी नहीं छोड़ सकते।

राजन : तुम मुझे नहीं जानते।

गयादत्त : इस जगह को जानता हूं, जहां आप खड़े हैं। मैं यह भी साबित कर सकता हूं कि अपने 'बाई एलेक्शन' में बेईमानी की है। (सन्नाटा) चलिये, टेलीफोन उठाइये.....उठाइये.....उठाइये.....!

राजन : (चीखकर) शटअप !

(इस चीख के बाद राजन फोन करते हैं।)

राजन : यस....राजन स्पीकिंग...यस....हां, केजरीवाल के गोदाम की सील तोड़ दी जाय....फायर आर्म्स वापस किये जायें। (फोन रखते हैं।)

गयादत्त : हुजूर, हमारी बड़ी मजबूरियां हैं, कोई सेवा हो तो जरूर मुझे याद कीजियेगा...अच्छा, नमस्ते।

(गयादत्त तेजी से बाहर जाते हैं। राजन बढ़कर टाइपराटर पर कुछ टाइप करते है। भीतर से विमल आती है।)

विमल : चलो अन्दर.....चाय तैयार है। सुनिये...पिताजी चाय के लिये आपका इन्तजार कर रहे हैं....यह क्या है ? 'रिजिग्नेशन' !

राजन : सेफ में मेरी बिल रखी है , उसे ले आओ।

विमल : सेफ की चाबी तुम्हारे पास है।

राजन : क्या ?

विमल : जिस दिन से तुमने उसमें 'बिल लॉक' किया, मैं नहीं जानती उसकी चाबी। (विराम) मेरी ज्वेलरी बैंक के लॉकर्स में है।

राजन : मेरी विल से तुम्हारा कोई मतलब नहीं ?

विमल : चाय ठंडी हो रही है।

राजन : थैंक्यू...!

(भीतर से पिताजी आते हैं।)

पिता : उठो, चलो न। दिन–रात इतना काम करते–करते.....

राजन : यही आपकी इच्छा थी न !

पिता : सिर्फ मेरी

राजन : और किसकी ?

पिता : ऐसा नहीं सोचते ।

राजन : कितना अच्छा होता !

पिता : अब और क्या परेशानी है ?

राजन : आप वकील हैं...मै आपके लिये महज एक केस हूं।

पिता : ऐसा तुम सोचते हो।

राजन : पर क्यों ?

(बाहर से तेजी से आत्मन का प्रवेश)

आत्मन : आपको उन दोनों के खिलाफ कोई सबूत चाहिए था न, ये लीजिये...केजरीवाल ने मुझे अपनी मिल में 'ऑनरेरी लेबर एडवाइजर' की पोस्ट ऑफर की थी––'मोस्ट कान्फीडेंशली' तीन हजार रूपये महीने आन रेरियम....और यह देखिये गयादत्तजी का कमाल––यह गुप्ती चिट्ठी उन्होने अपने एक खास आदमी को दी थी मेरी हत्या कर देने के लिये। संयोग से वह आदमी मेरी लेबर यूनियन के एक मेम्बर का दोस्त निकला।

(खतों को राजन नहीं ले सके हैं। एक खत पिताजी हैं, दुसरा विमल के हाथ में हैं।)

पिता : इससे एक उम्दा केस चलाया जा सकता है।

विमल : इस सबूत पर गयादत्त को हिरासत में लिया जा सकता है।

पिता : ऐसे और भी कागजात हैं आपके पास ?

विमल : देखिए, आपके पास और जरूर होंगे।

राजन : (सहसा) कौन ? कौन खड़ा है उधर ?

(गयादत्त का प्रवेश)

राजन : अभी आप गये नहीं ?

गयादत्त : बाहर आपकी पुलिस से कुछ बातें करने लगा था––उनकी भी बड़ी समस्याएं हैं....कहिए आत्मन साहब, आप क्या लेकर आये हैं ?

राजन : मिस्टर आत्मन, आप पुलिस स्टेशन जाइए....

गयादत्त : ओह, कुछ चिट्ठियां लेकर आये हैं ! भाई, उन निजी खतों से साहब का क्या ताल्लुक ?

आत्मन : मै तुझसे बात नहीं करना चाहता।

गयादत्त : मुझे तो आपकी चिन्ता है। मैं आपकी बड़ी इज्जत करता हूं। मसलन आप कितना अच्छा बोलते हैं।

आत्मन : (दोनो खत लेते हुए) खैर, इस गंडेशाही के सामने, मैं अपने घुटने नहीं टेक सकता।

गयादत्त : भाई, भाषा का तो खयाल रखा करों...पता है, कहां खड़े हो ?

आत्मन : आप दोनों के बीच––गुंडाशाही... नौकरशाही !

पिता : (क्रोध में) आप लोग बाहर जाकर लड़िये !

राजन : बस ! इतने में आप ऊब गये !

विमल : आइए पिताजी.....

(विमल के संग पिता का प्रस्थान)

गयादत्त : मुझे दो खत।

आत्मन : मैं इन्हें अखबार में छपवाऊंगा और लोगों को बताऊंगा––नौकरशाही पर खड़ा हुआ प्रजातंत्र कितना खोखला और बेमानी होता है। यह एक बिलकुल नयी साम्प्रदायिकता है, जो एक नये 'फासिज्म' को जन्म देती है।

गयादत्त : सुना, कितने अच्छे खयालात हैं.....!

आत्मन : सिर्फ इतना जानता हूं––तुम सबने मिलकर अर्थ और समाज की जो दीवारें बनाई हैं, उन्हें पहले तोड़कर ही तब कोई बुनियादी काम हो सकता है।

गयादत्त : तु विध्वंसक है...तुझमें कोई रचनात्मन शक्ति नहीं।

आत्मन : रचना के उस श्रोत को इसी काले पहाड़ ने बंद कर रखा है।

गयादत्त : बंद कर बकवास !

आत्मन : ये बेहुदा ठहरा हुआ शून्य मुझे जिन्दा ही निगल ले जाय.....पर इसके मनहूस चेहरे को अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता।

गयादत्त : रूक.....तू जायेगा कहां ?

(आत्मन के पीछे गयादत्त का प्रस्थान। कुछ क्षणों बाद पृष्ठ भूमि में पिस्तौल चलने की आवाज। भीतर से पिताजी और विमल दौड़े आते हैं।)

पिता : क्या हुआ ?

विमल : आप बोलते क्यों नहीं ?

पिता : क्या हुआ ?

(दोनों बाहर दौड़ते हैं। गयादत्त का प्रवेश।)

गयादत्त : बड़े अफसोस की बात है, आत्मन ने आत्महत्या कर ली।

राजन : तूने आत्मन की हत्या की.....मैं चश्मदीद गवाह हूं।

गयादत्त : अहाते के बाहर उसने.....

राजन : तुने हत्या की....!

गयादत्त : फिर तो आप ही फंसेंगे।

(तेजी से गयादत्त का प्रस्थान। दूसरी ओर से दौड़ी हुई विमल आती है।)

विमल : हाय, इस तरह आत्मन की हत्या किसने की ?

राजन : 'आई हैव किल्ड हिम'...वह चीखा तक नहीं।

विमल : बकवास बन्द कीजिये।

राजन : अब बाहर निकल सकता हूं।

विमल : हां, फांसी मिलेगी।

राजन : फांसी..... (हंसी)

विमल : छीः छीः छीः !

राजन : (जैसे कोर्ट में खड़ा हो) मैने पूरे होशो–हवास में, जान बूझकर हत्या की। वह बेकसूर था–जन्म से बेकसूर––अनजान.....हेल्पलेस....उसे वही बनाया गया जो लोगों की इच्छा थी, जरूरत थी। (सहसा) यह गलत है... .वह सरासर कसूरवार था। उसका विश्वास था कि मनुष्य स्वतंत्र है, इस हद तक....वह आत्महत्या करे। वह आजाद है, अन्याय सहने के लिये, पाप भोगने के लिये, अपराध जानने के लिये, और तर्क पागल होने के लिये।

(तेजी के गयादत्त और पिताजी का प्रवेश।)

गयादत्त : सुनिये.....सुनिये....फौरन....!

विमल : (भयभीत, बीच ही में) ऐसा हुआ कि...ऐसा हुआ कि....बात यह हुई कि मिस्टर आत्मन न जाने क्यों बेहद गुस्से में थे। सबको गालियां बक रहे थे। आपको, मिस्टर राजन को, सबको भद्दी गांलियां देते रहे। आप तो जानते ही हैं, कल हमें यहां से चार्ज देकर चले जाना है। हमें दुनिया–भर से क्या मतलब ! हमें चुपचाप आंखे मूदें अपने रास्ते पर चले जाना है। कमिश्नर की 'बेसिक पे' ढाई हजार से शूरू होती है। इन्हे कम से कम ज्वाइण्ट सेक्रेटरी तक पहुंचाना है। साढ़े तीन हजार तनख्वाह पर पहुंचकर ये रिटायर्ड होंगे। तब तक कम–से–कम ढाई लाख हमारा प्रॉविडेंट फंड होगा। इन्हें सात सौ रूपये महीने पेंशन मिलेगी, और आप जानते हैं, रिटायर्ड होने के बाद कोई घर

पर नहीं बैठता। यह किसी फर्म में एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर, किसी बोर्ड के फाइनेंस एडवाइजर, नहीं तो किसी यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर....

(इस बीच गयादत्त ने कई बार बोलने और विमल की बात काटने की कोशिश की है, उधर फोन की घंटी बजकर चुप रह गई है। विमल की सांस जैसे जवाब दे गई।)

गयादत्त : यहा क्या बकवास, हमारे पास अब समय नहीं।

विमल : नहीं, नहीं, सुनिये तो....सुनिये तो.....मेरी बात सुनिये.....

गयादत्त : (क्रोध से) आप चुप रहिए.....!

(सन्नाटा)

गयादत्त : कहिए वकील साहब, केस खुदकुशी का है न ?

पिता : इस जगह गोली लगी है, और पिस्टल भी उसके दायें हाथ के पास पड़ी है। मुंह के बल गिरना दूसरा सबूत है।

गयादत्त : बाहर ड्यूटी पर खड़ा पुलिसमैन चश्मदीद गवाह है।

पिता : न कुछ बोलना, न कोई चीख–पुकार। यह भी सबूत है।

राजन : (चीखकर) हां उसने आत्महत्या की।

(तेजी से बाहर निकल जाना।)

(पीछे–पीछे गयादत्त और पिताजी जाते हैं।)

विमल : (प्रसन्न) उफ ! कितनी गर्मी है !

(प्रकाश बुझ जाता है। जैसे ही लौटता है, मंच पर बहुत कम प्रकाश है। टेबुल पर टेपरिकार्डर चल रहा है। सोफे पर मूर्तिवत् राजन बैठे हैं। उनके सामने फाइल और अन्य कागजात हैं। टेपरिकॉर्डर से सहसा अजीबोगरीब किस्म की आवाजें आने लगती हैं। राजन तेजी से बढ़कर टेप बंद करते हैं।)

राजन : कौन ?

राजन : कौन हो तुम ?

राजन : कहां छिपा था ?

राजन : मेरे भीतर।

राजन : (हतप्रभ) चौदह वर्षों से।

राजन : चोर.....उचक्का...हंसता है, गोली से उड़ा दूंगा।

राजन : क्रिया के लिए आत्मविश्वास की जरूरत है।

राजन : किसके सामने खड़ा है ?

राजन : अपने।

राजन : बातूनी !

राजन : वही तो।

राजन : कमरे को जरा भी गंदा किया तो...खबरदार कागज पर हाथ लगाया....कुर्सी छूना नहीं। कमरे की एक चीज भी इधर–उधर की तो.....बदतमीज.....

राजन : कमरे का 'बैलेन्स' भी नहीं बिगाड़ सकते। अब देखो यह तसवीर। (दीवार पर टंगी तसवीर पर चाक से 'क्रास' मारता है).....क्या मूर्ति है ! सजावट के लिए जरूरी है मूर्ति का टूटा होना, क्यों ? इसके लिए कितनी कीमत चुकानी पड़ी ? याद भी कैसे रहता !

राजन : गेट आउट...गेट आउट !

राजन : तुझे अब तेरा यही सत्य बचा सकता है और कुछ नहीं....कोई नहीं।

राजन : चुप रह, वेशर्म !

राजन : लोग यही खींच लूंगा।

राजन : तू आगे कुछ नहीं बोल सकेगा।

राजन : तु यहां से चला जा !

राजन : तुम्हीं तो कुछ ढूंढ़ रहे थे....!इसमें, इसमें....इसमें....इसमें.....(दौड़कर फाइल को उलट देता है। कागज हवा में उड़ता है।)

राजन : तेरी यह हिम्मत.....बदतमीज !

(सोफे पर खड़ा हो गया है।)

राजन :.....खुद हारकर, फिर अपने एक–एक अंग से लड़ने का नाटक। आत्मन से तेरा कोई संबंध नहीं। वह तुझसे तभी छूट गया, जब तु यहां घुसा। उसी के बाद ही मैं जन्मा हूं। आत्मन, गयादत्त, राजन, केजरीवाल––सबसे अपने चारों ओर नकली लड़ाई का एक चक्रव्यूह....

राजन : मैं दिन–रात लड़ता रहा।

राजन : (नीचे उतरता है) वही हारी हुई लर्ड़ा।

राजन : मैं इतनी ईमानदारी से काम करता रहा।
राजन : सिर्फ वही व्यवस्था बनाये रखने का काम।
राजन : और मेरी ताकत क्या थी ?
राजन : तभी बाहर निकल आते।
राजन : मैं जिम्मेदार आदमी हूं....
राजन : आदमी नहीं, केवल जिम्मेदार। (हंसता है) मैं प्रतिभावान व्यक्ति हूं...सबमें विशेष....हूं..यहां तक कि नौकरी में भी विशेष...इसके आग्र बुनियाद को ही भूल गये।
राजन : मैंने कभी कोई बेइन्साफी नहीं की।
राजन : इसके लिये हर क्षण खुद से बेइन्साफी की।
राजन : दिन–रात अपने कामों में लगा रहा।
राजन : किसी काम में अपने–आपको पूरी तरह से नहीं झोंका.....हर वक्त कुछ बचाकर इसी दिन के लिए रखे रहता था... पर ऐसा नहीं होता।
राजन : सुन....सुन !
राजन : अब तक बहुत सुन लिया....अपने उसी बचाव के लिए क्या–क्या तर्क, किसने–कितने सिद्धांत ?
राजन : ये तू कैसे कह सकता है ?
राजन : हां, तूने न्याय किये, अन्याय को छिपाने के लिए। अपराधी को दंड दिए, अपराध पर पर्दा डालने के लिए। खुदकुशी की, खुद को जिन्दा रखने के लिये।
राजन : तब तेरी आस्था थी, स्वतन्त्रता के बाद आजादी की लड़ाई शुरू होती है....
राजन : वह अब तक है।
राजन : मेरे जन्म के साथ, तुझमें अब एक नया विश्वास पैदा हुआ है...आज समाज में केवल दो ही 'आइडिया' हैं, राजनीति और नौकरी...! तभी हर राजनीति नौकरी हो जाती है, और नौकरी राजनीति।
राजन : मुझे छोड़ता है या नहीं ?
राजन : तेरे समय में जो कुछ भी छुपा है, सबकी जिम्मेदारी तुझ पर है।
राजन : यह सरासर गलत है।
राजन : तुझे अपने अलावा और कुछ पता नहीं। इन वर्षों में क्या–क्या हुआ, मुझे यह केवल एक टेप मिली है।

(बढ़कर टेप चला देना। उसमें से अजीबोगरीब आवाजें, चीख–पुकार फैलती हैं। राजन दौड़कर मशीन बंद करते हैं।)

राजन : उसे कैसे बंद कर सकता है, जो मुझ पर 'रिकार्ड' हुआ है....यह देख, इसमें असंख्य टैक्स.....

(फिर मशीन चला देते हैं, और स्वयं न जाने किस भाषा में क्या–क्या बोलते रहते हैं। राजन टूटकर फर्श पर गिर पड़ते हैं।)

राजन : उठो....यहां आओ.....बैठो....यह लो अपना त्यापत्र, फाड़ दो। यह केस हारा हुआ है, स्वीकार करो। यह लो 'चार्ज सर्टिफिकेट फार्म'....इस पर दस्तखत करो।

(राजन वैसा ही करते जा रहे हैं। धीरे–धीरे मंच का सारा प्रकाश बुझ जाता है। जैसे ही लौटता है, तो उसके साथ दिन जैसा तेज पकाश है, और उसमें डिनर से पूर्व ऊंचा संगीत है। पिताजी मेहमानों से बातचीत कर रहे हैं। विमल मिसेज राठौर के संग बातों में वयस्त हैं।)

मि0 राठौर: (विमल से) आपकी यह साड़ी खूब मैच करती है।
विमल : आप अपने ब्लाउज किससे सिलवाती हैं।

(दुसरी ओर)

गयादत्त : देखिये न....आजादी की बात करते हैं। उन्हें इतना भी पता नहीं, कि इन्सान नीचे और नीचे ही धंसता चला जाता है, जैसे दरख्त की जड़े...
पिता : अपनी खुराक के लिए धरती के नीचे और अंधकार में जाती रहती हैं।
कई लोग : जी...हां....बेशक....
एक पुरूष: आजकल कोई अच्छी फिल्म नहीं आ रहीं हैं।
एक स्त्री : एक अंग्रेजी फिल्क आयी है...'द फ्लाइंग सासर'.....
कई लोग : 'द फ्लाइंग सासर' ! (हंसते हैं।)
विमल : मैंने अपनी उस आया को इसलिये निकाल दिया कि वह अंग्रेजी बिल्कुल नहीं बोल पाती थी.....
मि0 राठौरा : आजकल आपका वजन कितना है ?
गयादत्त : वकील साहब, मेरे पास वक्त नहीं हैं, वरना.....
पिता : सहीं है ! सही है !.....अब डिनर का वक्त ही गया।

एक पुरूष: मेरा खयाल है, मिस्टर आत्मन राजनीति के आदमी नहीं थे...क्यों जनाब, आपने कभी किसी पॉलीटिशियन को खुदकुशी करते सुना है ?

(पत्नी सहित एक व्यक्ति का प्रवेश)

पिता : आइए, आइए, तशरीफ ले आइए....

गयादत्त : ओ हो, पुरी साहब ! कहिए, आपके क्या हालचाल हैं ? आप तो इधर दिखे ही नहीं। यह आपकी मिसेज हैं ? क्या नाम है बेटी तुम्हारा ?

युवती : नानसेंस।

व्यक्ति : मिस्टर राजन से मिलने आया था....

गयादत्त : बस आ ही रहे हैं। हमारे देश में सुन्दरता की कोई कमी नहीं। अजी, औरत की तो बात ही छोड़िये, यहां के पेड़–पौधे कितने खूबसूरत हैं–वाह ! क्यों जनाब ?

विमल : अन्दर जाइए न, वहां इंतजाम है।

गयादत्त : वकील साहब, यह क्या इंतजाम है ? आप तो जानते हैं, मैं कोई काम छिपकर नहीं करता। क्यों साहब, मैं कुछ गलत तो नहीं कह रहा ?

कई लोग : अजी, क्या बात है !

पिता : श्री यहीं ले आना।

गयादत्त : जरा बड़ा वाला !...हां, तो जनाब, मैं क्या कह रहा था ?

एक व्यक्ति : कुछ खुबसूरत के बारे में....

गयादत्त : हां, तो अर्ज यह कर रहा था, खुबसूरती भी क्या चीज है ! जिसे खुदा दे, वह भी परेशान, जिसे न दे, वह भी पेरशान....क्यों, क्या खयाल है ?

पिता : महाशयजी, यह आपकी चौथी है। डाक्टर ने क्या कहा है ?

दूसरा व्यक्तिः खुदा आपकी यह सेहत कायम रखे...उम्रदराज हो, अभी आपको मुल्क और इन्सानियत के लिए बहुत कम करने हैं।

गयादत्त : क्या, काम ? (हंसना) अजी कौन साला काम करता है। काम तो अफसर लोग करते हैं। क्यों साहब ?

एक व्यक्ति : मिस्टर राजन अब तक नहीं दिखे !

गयादत्त : मिस्टर राजन ! भई वाह, ऐसा आला अफसर इस जिले में अब तक कोई नहीं आया–'ही हैज ग्रेट फ्यूटर'.... .हैं जी....बिलकुल !

दूसरा व्यक्तिः 'वी हैव ग्रेट रिस्पेक्ट' !

एक व्यक्ति : अजी क्या कहने हैं !

गयादत्त : भाई, अब राजन साहब को बुलाओ।

मि0 राठौरः देखिये ने, मेरे हसबैंड अब तक नहीं आए। दरअसल वह बड़े 'बिजी' आदमी हैं।

एक स्त्री : उस दिन का 'फोक सांग' बड़ा मजेदार रहा।

दूसरी स्त्रीः 'फोक्स सांग' मुझे भी बहुत पसंद है।

तीसरी स्त्री : शादी के पहले मैं भी गाती थी।

पिता : बस, राजन आते ही होंगे।

गयादत्त : आपसे मिलिये, राजन साहब के पिताजी।

पिता : बड़ी खुशी हुई आपसे मिलकर।

(भीतर से बड़ी संजीदगी और रोब के साथ राजन का प्रवेश। लोग उन्हें 'बधाई', 'मुबारकबाद', 'कांग्रेचुलेशन' कहते हुए घेर लेते हैं। राजन भीड़ में रूंधे हुए कुछ कह रहे हैं।)

राजन : थैंक्यू वेरी मच ! देखिये, मैं आप सब का हूं। प्लीज !

गयादत्त : बस–बस भाई, इधर आ जाओ। क्यों साहब, क्या हाल हैं ?

राजन : आप कहिये !

(गयादत्त मुंह में गिलास लगा सहसा हंस पड़ता है। शराब के छींटे राजन के मुंह पर पड़ते हैं।)

राजन : यह क्या बदतमीजी है ! आई कांट टालरेट ! यह क्या तमाशा है !

(लोग एक तरफ बातें कर रहें हैं, हंस रहे हैं, खा–पी रहे हैं। राजन बिल्कुल अकेला छूट गया है। बढ़कर फोन करने में अपने को वयस्त कर लेता है। डिनर का संगीत पूरे वातावरण पर छा गया है। पर्दा।)

●●

यह नाटक और इसका प्रदर्शन

वीरेन्द्र नारायण

अभिमन्यु की पौराणिक कथा सर्वविदित है। महाभारत का यह शायद सबसे बेचारा चरित्र है जिसे महारथियों के खिलाफ अकेले लड़ना पड़ा, जिसे चक्रव्यूह में घेरकर मार डाला गया।

यह नाटक एक समानान्तर चित्र उपस्थित करता है। मिस्टर राजन भी घिर गया है और निर्धारित अंत सामने आता है जो एक साथ क्रूर और वासक है। वह मरता नहीं, उसकी तरक्की हो जाती है। लगता है, अभिमन्यु की शहादत छीनकर उसे कृपाचार्य के पद पर प्रतिष्ठित कर दिया गया।

लेकिन उसके दुश्मन कौन हैं ? जिन्हें हम रंगमंच पर देखते हैं–दोनो राजनीतिज्ञय, उसकी पत्नी, होस्टल में पढ़ने वाले उसके बच्चे या पिता जिन्होने उसकी जीवन धारा निश्चित कर दी ? राजन बहुत प्रखर है और सब किसी को कठघरे में खड़ा कर जांचता–परखता है। पर इनके बीच गुस्से की भड़क भी दिखाई पड़ती है जिसमें वह सारे बंधन तोड़ देना चाहता है। उसे अपनी नियति का पता है। शायद वह जानता है कि उसका अंत क्या है। इसीलिए जिनके जोर से वह भड़कता है उसी अनुपात में उसकी लाचारी उभरती है। बड़ी बेरहमी से यह स्पष्ट होता है कि गयादत्त की अवसरवादिता, आत्मन की सिद्धांतवादिता और राजन की चीख–पुकार हमारी आज की जिन्दगी के खोखलेपन का ताना–बाना प्रस्तुत करती है जिसमें विमल और श्रीमती राठौर के गुलबूटे जड़े हैं। यह किसी योद्धा की त्रासदी नहीं जो लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त होता है। यह एक ऐसी लाश की त्रासदी है जो जीना चाहती है और अंततः महसूस करती है कि वह लाश ही है।

आप इसे त्रासदी कहेंगे ! आप ही पर यह छोड़ता हूं।

जिस दिन 'मिस्टर अभिमन्यु' के पाठ के लिए गया था और जब नाटक का आखिरी प्रदर्शन हुआ, इसके बीच का अरसा एक तरह के नशे में कटा। अब नशा उतरा–सा लगता है और लेखा–जोखा लेने बैठा हूं।

दरअसल यह नाटक यह नाटक और इसके पात्र मुझे बहुत अपने–से लगे, अच्छी तरह जाने–पहचाने जिनसे लगातार मिलता–जुलता रहा हूं, जिनके साथ रोज का उठता–बैठता है। और फिर लगा कि शायद आईना देखते समय रोज मिस्टर अभिमन्यु को तो नहीं देखता हूं।

कथानक सीधा–सादा है। एक ईमानदार और आदर्शवादी युवक सरकारी नौकरी करता है। लेकिन आज का समाज, राजनीति उसे न ईमानदार रहने देती है और ने आर्दशवादी। महाभारत के अभिमन्यु–सा वह घिर जाता है। डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल ने इस समानान्तर में आगे बड़कर जो कदम उठाया है, वह अभिमन्यु की हत्या नहीं है। वह है अभिमन्यु की शहादत की हत्या। शायद महाभारत काल से लेकर आज तक हमारे विकास का यही प्रतीक है। महाभारत काल में शहादत मिल जाती थी, आज उसी की हत्या कर दी जाती हैं।

इसीलिए यह नाटक पहले ही पाठ में दिल में गड़ गया। नाटक का रिहर्सल प्रारम्भ हुआ। समस्या सामने आयी। अभिनय के दौरान में हर बार यह खतरा महसूस होता था कि नायक राजन दया का पात्र बन कर न रह जाय। इसके कई कारण थे। नाटक के मूल रूप का रिहर्सल करते समय यह एहसास होता था कि नाटक जैसे चक्रव्यूह से निकलने की पूरी चेष्टा नहीं कर पाता। बहसें हुईं और लेखक ने कई अंश जोड़े। इसे नये रूप में नाटक प्रदर्शित हुआ।

राजन दो राजनीतिज्ञों के बीच झूलता–सा रहता है पहले अंक में। एक ओर है आर्दशवादी आत्मन और दूसरी ओर 'सफल' गयादत्त। वह स्वभावतया आत्मन की ओर आकृष्ट होता है, गयादत्त से घृणा करता है। जब 'मंत्रीजी' के दबाब से वह मजबूर होता है। तो प्रतिक्रियास्वरूप और सख्ती बरतता है। गयादत्त के पीट्ठू केजरीवाल के साथ। वार का जवाब इस तरह एक वार से वह देता है लेकिन घिरते हुए चक्रव्यूह से निकलने की चेष्टा भी करता है। उसकी पत्नी आज भी उसके साथ है। लेकिन सहसा उसे लगता है कि सहारा उसे वहां भी नहीं मिल सकता, क्योंकि उसकी पत्नी अब 'माहौल', तरीका आदि बन्धनों में जकड़ी हुई है। पहले की तरह वे झगड़ भी नहीं सकते। पहले की तरह युवक और युवती की हैसियत से दीन–दुनियां भरमाकर एक–दूसरे में खो नहीं सकते, चाहते हुए भी एक–दूसरे की कोई मदद नहीं कर सकते, क्योंकि दोनों दो धरातल पर जी रहे हैं और सेक्स भी जो उन्हें आसानी से घसीटकर एक जगह ला सकता था, कहीं पीछे छुट गया है।

पहला अंक जब समाप्त होता है तो स्पष्ट लगता है एक ओर पत्थर की मजबूत दीवार बन गई है और उस तरफ निकल जाने की कोशिश करना पत्थर से सिर टकराना है।

दूसरे अंक में राजन दूसरी ओर निकल भागने की कोशिश करता है। विचारों की दुनिया में जीने का रास्ता अपनाया जा सकता है। इसी बात पर 'इस्तीफा' देकर आत्मसम्मान बचाया जा सकता है। लेकिन दोनों राजनीतिज्ञों को, पत्नी और उसके बहाने समाज की मन्यताओं को तौलकर वह देखता है कि 'हर विश्वास जेलखाना है।' हर मूल्य किलेबन्दी है।' दूसरी ओर भी दीवार सामने आती है। यह रास्ता भी सदा के लिये बन्द हो जाता है।

दूसरे अंक के अंत में जब गयादत्त आत्मन की हत्या कर देता है राजन के बंगले के अहाते में तो उसे एहसास होता है कि हत्यारा वहीं है, क्योंकि उसके भीतर भी एक आत्मन और गयादत्त था। और उसके भीतर भी आत्मन की हत्या गयादत्त ने कर दी । उस समय भी वह कह सकता था–गयादत्त ने आत्मन की हत्या की। शायद तब उसे शहादत मिल जाती। लेकिन तभी उसे पत्नी का स्वर सुनाई पड़ता है। ढाई लाख प्रॉविडेंट फंड, दोनों बच्चों की शादी , रिटायर होने के बाद किसी फर्म का एक्जिक्यूटिव डायरेक्टर, किसी यूनिवर्सिटी का वाइस चांसलर आदि। और उसे भी गयादत्त सं स्वर में स्वर मिलाकर

कहना पड़ता है कि आत्महत्या की। इस तरह तीसरी दीवार पूरी होती है। इसके तुरंत बाद विदाई पार्टी के दृश्य में जब वह गयादत्त के स्वर में स्वर मिलाकर आत्मन की चर्चा करता है और संदेश देता है, विदाई संदेश– 'मैं आप लोगों का ही हूं' तो चारों दीवारें पूरी हो जाती है।

नाटक सदा–सर्वदा दो स्तरों पर चलता है। एक समस्या सरकारी नौकरी की है, दूसरी समस्या उस व्यक्ति की है। सरकारी नौकरी की समस्या में चीखता–चिल्लाता है, नाटकीयता है। आसानी से समझ में आती है और दिखाई पड़ती है। व्यक्ति की समस्या में विश्वास और मूल्यों पर चोट पड़ती है, उनका पर्दाफाश होता है। शायद हिन्दी नाटक में अभी यह स्वाद अजाना है इसलिए खुश्क आंखों पर शक किया जाता है और यह याद नहीं रहता कि यूं आंसू बहाये जाते है।

इस नाटक के स्वाद को तीखा बनाने के लिए मैं जो दृश्यबंध काम में लाया उसमें राजन के कमरे की दो दीवारें और उनके बीच का कोना दिखाई पड़ता था। इस तरह दर्शकों के सामने था रंगमंच की सतह का त्रिभुजाकार हिस्सा। एक दीवार में बाहर का दरवाजा और मेंटलपीस था। दूसरी दीवार में फुलवारी और बैडरूम के दरवाजों के बीच खिड़की भी जिससे फुलवारी का कुछ हिस्सा भी दिखाई पड़ता था। मेंटलपीस के ऊपर एक चित्र था। कमरे की दीवारों का रंग मैंने ऐसा रखा था कि जो भूरे और काले के बीच का कहा जायेगा। पर्दे भी मिलते–जुलते थे। दिल्ली–प्रवास ने यह दिखाया है कि जो सुविधाएं सरकारी तौर पर मिलती हैं, उनका सरकारी क्वार्टरों से अच्छा उपयोग होता है। गांठ के पैसे कम निकाले जाते है। इसलिए फुलवारी बहुत शानदार रखी थी। इस दृश्य–बंध का यह फायदा था कि दर्शकों का ध्यान बिखर नहीं जाता था और राजन, आत्मन तथा गयादत्त के त्रिकोण के अनुरूप दृश्यात्मक रूप से एक त्रिकोण सामने आता था।

अभिनय के स्तर पर भी मुझे कई प्रयोग करने पड़े। राजन के जीवन का समाज की मान्यताओं का खोखलापन दिखाने के लिए मैं राजन और उसकी पत्नी के कई अंशों में फिल्मी कम्पोजिशन भी काम में लाया ताकि उनकी शारीरिक निकटता के बावजूद उनके अस्तित्व के धरातल की बाधक पंक्तियां और तीखी लगें। राजन और उसकी पत्नी विमल की उस त्रासदी की परिणति–स्वरूप मैंने विमल की गोद में लेटे हुए राजन से कहलवाया–यही नरक है। एक की जरूरियात को दूसरा पूरा करे, दूसरे की दी हुई लड़ाई को सत्य मानकर आजीवन उससे जूझता रहे। इसीलिए जब पहले बड़े प्यार से कहती है––'आदमी अपनी जगह से इसलिए भागना चाहता है कि अपने को स्वंय से बड़ा साबित करना चाहता है।' नाटक में ऐसे स्थलों की कमी नहीं जहां विमल और राजन एक–दूसरे को कोस सकते हैं और तानेकशी कर सकते हैं। तब सतही नाटक उभरता जो शायद दिल्ली के पत्र–पत्रिकाओं के आलोचकों को प्रिय है। लेकिन उस हालत में सिर्फ पति की समस्या सामने आती। पति और सरकारी नौकरी के भीतर जो व्यक्ति है, वह छूट जाता।

आत्मन और गयादत्त के अयथार्थवादी दृश्य में प्रकाश व्यवस्था के चमत्कार के बदले मैंने दोनों की आवाज रंगहीन कर दी थी। कभी–कभी दोनों इसी तरह की मशीनी और उतार चाढ़वहीन स्वर में एक साथ भी बोलते थे। सिर्फ राजन अपने सहज स्वाभाविक स्वर में बातें करता था।

राजन के व्यक्तित्व का निरूपण ही सबसे कठिन समस्या थी। उसे कई स्तरों पर एक साथ जीना पड़ रहा था। सरकारी अफसर की तरह व गर्वीला था, रोबदारवाला और अधिकार पूर्ण ! इस हैसियत से वह डांटना था, गयादत्त जैसे सफल राजनीतिज्ञ को भी 'शटअप' कह सकता था। पति की हैसियत से उनके और विमल के अंशों में मैने एक तरह का हल्कापन, ऊपर से लादी गई और ली गई चंचलता भरी थी जो एक तरफ तो उसके असंतोष तो दूसरी तरफ खोखलेपन को उभारती थी। उसके व्यक्ति क जो प्रतिक्रियाएं और उपलब्धियां थीं उन क्षणों में शारीरिक रूप से मैंने उसे निश्चल कर दिया था ताकि वे पंक्तियां एक प्रकार की निर्वेयक्तिकता पा सकें, राजन के मुंह से सभी पर लागू होने वाले सत्य की सफल अभिवयक्ति बन सकें। इसका यह अर्थ नहीं कि उन पंक्तियों को कहते समय अभिनय की सघनता में किसी प्रकार की कमी की गई थी, बल्कि सच पूछा जाय तो अभिनय भाव–भंगिमा और अंग–संचालन की परिधि से बाहर निकलकर अपने संपूर्ण अस्तित्व को पंक्तियों में डुबो देना चाहता है।

यह तीसरा स्तर लोगों के लिए भारी पड़ा। शायद अनुभूति की इस गहराई से परिचय न रहा हो अथवा इस धरातल की कल्पना न हो। लेकिन चारा भी क्या था ! मेरे लिए तो इस नाटक का यही कटु सत्य ही सबसे बड़ा आकर्षण था जिस कारण मैंने इसका निर्देशन अपने हाथ में लिया। मेरे लिए तो यही धरातल असली धरातल था जिस कारण पत्नी की गोद में लिटाकर पति के मुंह से कहलाया––यही नरक है। मेरे लिए तो यही नाटक था जिसमें विश्वास और मूल्य टूटते और बनते हैं। मुझे सन्तोष और गर्व है कि मेरे पात्रों ने इसे समझा। मेरे दर्शकों पर भी इसकी पंक्तियां जीवित हो उठीं। जिन्होनें नहीं समझा और अपने भीतर झांकने के बदले पत्र–पत्रिकाओं के पन्नों में झांकने लगे, उनके लिए वह शेर याद आता है :

'जरा उनकी शोखी तो देखिये लिए जुल्फ–खम–शुदा हाथ में, मेरे पीछे आए दबे–दबे, मुझे सांप कहके डरा दिया !'

बस उनकी शोखियां देखता हूं और जो जुल्फ–खम–शुदा को सांप समझकर देखते तथा डर जाते हैं, उनकी तबीयत की दाद देता हूं। बेचारे करें भी क्या ! अंगेजी के माध्यम से हिन्दी समझना मुश्किल काम है।

• • •